॥ ओ३म् ॥

ब्रह्माकुमारी मत खण्डन

लेखक :

डा० श्रीराम आर्य
(कासगंज)

प्रकाशक :

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद
(उ० प्र०)

सन् १९९४

मूल्य : छः रुपये मात्र

धर्म प्रकाश आर्य 5/16

॥ ओइम् ॥

ब्रह्माकुमारी मत खण्डन

श्वेत वस्त्र धारिणी इस मत की प्रचारिका स्त्रियां ही होती हैं जो नवयुवती, सुन्दरी एव शिक्षित होती हैं, उनको कुछ पाठ व्याख्यान के रूप में कण्ठस्थ करा दिए जाते हैं तथा निश्चित प्रश्नों के ऊटपटांग तर्क युक्त बेसिर-पैर के उत्तर सिखा दिये जाते हैं जोकि वे अपने अन्ध भक्त चेले चेलियों को सुना दिया करते हैं। ईश्वर-जीव-पुनर्जन्म-सृष्टि रचना, स्वर्ग, ब्रह्मलोक. मुक्ति आदि के विषय में बेतुकी कल्पनायें इस मत की पुस्तकों में लिखी मिलती हैं, जिनका कोई भी आधार नहीं होता है। इसकी प्रचारिकायें घरों में जाती हैं, भोली स्त्रियों को बहका कर अपने सत्संगों में बुलाती हैं तथा वहां अपनी कल्पित मान्यताओं को चित्रों द्वारा दिखा व समझाकर उनको अपने मत में दीक्षित करती हैं। अनेक नवयुवक भी इनकी प्रचारिका स्त्रियों की ओर आकर्षित होकर इनके जाल में फंस जाते हैं। इन लोगों ने अपनी संस्था का नाम ही ब्रह्माकुमारी डिवाइन इन्स्टीटयूट अर्थात ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रख छोड़ा है और इस नाम के साइनबोर्ड इनके अड्डों पर लगे मिलते हैं।

इस सम्प्रदाय के अड्डों पर सत्संग प्रातः व रात्रि को प्रायः लगा करते है किन्तु साधारणतया इनका प्रचार प्रोग्राम हर समय चालू रहता है। अपना भक्त बना लेने पर इनकी प्रचारिकायें उनके घरों पर भी सत्संग लगाती हैं और उसके माध्यम से उस स्थान के आसपास रहने वाली स्त्रियों को प्रभावित करके अपनी शिष्या बनाती हैं। कहने को तो इनके सम्प्रदाय में पुरुष भी भरती होते हैं और उन्हें ब्रह्माकुमार कहा जाता है किन्तु प्रधानतया ये औरतों व नवयुवती लड़कियों को ही अपने में भरती करती हैं और उन्हें ब्रह्माकुमारी कहते हैं।

हिन्दू समाज में एक बड़ा भ्रम यह व्याप्त है कि श्रीकृष्ण जी पूर्ण परमात्मा थे साक्षात ब्रह्म का अवतार थे और गीता उन्हीं के उपदेशों का ग्रन्थ है । उसमें लिखा है कि श्रीकृष्ण जी हर युग में धर्म की ग्लानि अधर्म की वृद्धि होने पर अवतार लेते रहते हैं उसी के आधार पर आज जो भी पाखण्डी व्यक्ति चाहता है अपने को कृष्ण का अवतार बताकर साक्षात परमात्मा बन बैठता है । हंसा सम्प्रदाय का प्रवर्तक शूद्र कुलोत्पन्न हंसासिह, आनन्द मार्ग का आनन्दमूर्ति सरकार बंगाली ब्रह्माकुमारी मत का प्रवर्तक दादा लेखराज कृपलानी (सिन्धी) ये सभी एक ही समय में अपने को कृष्ण का साक्षात् अवतार बताते थे । इनमें दो तो मरकर मिट्टी में मिल गये किन्तु अभी आनन्दमूर्ति सरकार जिंदा है आश्चर्य की बात है कि तीन अवतार जिंदा बैठे रहे और किसी ने भी एक दूसरे को चुनौती नहीं दी कि मैं सच्चा अवतार हूं और तुम दोनों झूठे हो । न किसी के चेले ने तीनों अवतार बनने वालों की कुश्ती कराई जिससे उनकी असलियत खुल जाती । पाकिस्तान व चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिए, भारतीय सेनायें युद्ध में गईं परन्तु ये तीनों धूर्त अवतार अपनी चेलियां फंसाने में लगे रहे । एक भी लड़ाई के मोर्चे पर मरने नहीं गया ।

हमारी कौम का कैसा दुर्भाग्य है कि इसमें जो भी चाहता है परमात्मा बन बैठता है । कोई भी कम्बख्त मनुष्य बनना नहीं चाहता हैं । मुसलमानों में यदि कोई पैगम्बर बनने का दावा करे तो उसे तुरन्त छुरे से कत्ल कर दिया जावेगा । ईसाइयों में यदि कोई ईसा का अपने को अवतार बतावे तो उसे ईसाई गोली से उड़ा देंगे पर हमारी कौम में जो भी धूर्त चाहता है श्रीकृष्ण का अपने को अवतार बता कर मोक्ष देने का ठेकेदार बन बैठता है और उसके विरुद्ध हिन्दू में कोई क्रोध पैदा नहीं होता है । उसे हजारों चेले चेलियां मूडने को मिल जाते हैं और उनके सम्प्रदाय चल पड़ते हैं । ब्राह्मण कौम जिसके ऊपर यह भार था कि वह

विधर्मियों से हिन्दू जाति की रक्षा करेगी आज बिल्कुल नपुंसक हो गई है अथवा मर चुकी है उसका पाण्डित्य समाप्त हो चुका है और एक भी पौराणिक पंडित आज इन पाखण्डों अवतारों व उनके सम्प्रदायो के विरुद्ध मुंह खोलने की शक्ति नहीं रखता है। अधिकांश आर्य समाजी भी आज निर्विर्य होते जा रहे है उनमें भी आज देश में इन धार्मिक क्षेत्रों में पाखण्ड फैलाने वालों से टकराने के जोश की अब पहले के स्वाध्यायशील आर्यों जैसी उमंगें नहीं दिखाई देती हैं तब प्रश्न होता है कि इन पाखण्डों से हिन्दू की रक्षा कैसे होगी। बाहरी आक्रमण ईसाई व मुसलमानों के उस पर होते हैं और अन्दर से आनन्दमार्ग, हंसा, ब्रह्माकुमारी आदि अनेक ढोंगी सम्प्रदाय उसके धार्मिक संगठन को छिन्न भिन्न कर रहे हैं। इस समय आवश्यकता है कि हमारे शिक्षित नौजवान उठें और अपने धर्म की रक्षा को कटिबद्ध होकर इन पाखण्डी सम्प्रदायों की सारी पोलपट्टी जनता को प्रकट करें ताकि सभी इनके जाल से सचेत रहें और जो इनमें फंस गये वे उनमें से निकल आवें। यदि तत्काल ऐसा नहीं किया गया तो आर्य (हिन्दू) जाति का उज्जवल भविष्य अन्धकारमय बन जावेगा तथा पाखण्डों का प्रचार इस श्रेष्ठतम प्राचीनतम समाज को छिन्न भिन्न कर देगा।

हम हंसामत व अन्य सम्प्रदायों के विषय में अपनी अन्य पुस्तकों में बहुत कुछ लिख चुके हैं। अब इस पुस्तक में हम ब्रह्माकुमारी सम्प्रदाय के पाखण्ड का भण्डाफोड़ करते हैं ताकि सभी इसके जाल से बच सकें व दूसरों को भी बचा सकें।

यह मत वेद, शास्त्र, दर्शन, उपनिषद् स्मृतियां, प्राचीन ऋषि महर्षि, आर्य जाति के गौरवशाली महापुरुषों राम, कृष्ण आदि किसी को भी नहीं मानता है। यह उन सभी का घोर निन्दक है। वैदिक धर्म के प्राचीन सत्य वैज्ञानिक सिद्धांतों का भी उपहास करता है। वैदिक उपासना पद्धति का विरोधी है। पौराणिक धर्म के मान्य देवताओं व उनके

मन्दिरों का घोर निन्दक हैं ईश्वर को सर्वव्यापक, सृष्टिकर्ता एवं कर्मफल प्रदाता भी नहीं मानता है यह जगत को अनुत्पन्न अनादि बताता है। इसने ईश्वर को त्रिमूर्ति शिव का नाम दे रखा है और उसे आसमान में ऊपर कहीं कैद बता रखा है जहां से वह कभी कभी इस पृथ्वी पर उतर आता हैं और फिर ऊपर चढ़ जाता है। यह उसे बिन्दु रूप मानता हैं।

इस मत की मुख्य पुस्तक 'साप्ताहिक पाठ्यक्रम' नाम की किताब है जिसमें इस मत की सभी मान्य कल्पनायें लिखी हुई हैं।

इसी पुस्तक के आधार पर कुछ अन्य पुस्तकें भी इस मत की हमारे देखने में आई हैं जो निम्न प्रकार हैं —

'परमात्मा कौन है' परमात्मा का परिचय' पतित पावन कौन' 'गीता ज्ञान किसने दिया' 'मनुष्यात्मा' 'सतयुग में स्वर्ग वासी कैसे बने'।

इन सात पुस्तकों में एक ही बिषय है। हम अब उक्त पुस्तकों के आधार पर इस मत की मिथ्या मान्यताओं का खण्डन प्रस्तुत करते हैं जिससे सभी पाठकों को इसके पाखण्ड का सही स्वरूप देखने को मिलेगा।

ईश्वर विषय

यह मत ईश्वर को जगत का रचयिता, पालक पोषक एवं सहायक नहीं मानता है। न यह परमेश्वर की सर्वव्यापक सत्ता स्वीकार करता है। ईश्वर विषय में इस मत की पुस्तकों में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है-

ब्रह्मा'कुमारी- जैसे आत्मा एक ज्योति बिन्दु है वैसे ही आत्माओं का पिता अर्थात परमात्मा भी ज्योति बिन्दु ही है।' (सा० स० पृ० ५१)। संसार में सभी बीजों और अण्डों अर्थात रचयिताओं का भी अण्डाकार ही रूप होता है उसी प्रकार बीज रूप का भी अत्यन्त सूक्ष्म अणु रूप (अण्डाकार रूप) है (सा० स० पृ० ५४) क्या पिता कभी अपने पुत्रों में सर्वव्यापक होता है ? परमात्मा तो सर्व आत्माओं का पिता है, वह सब

सर्वव्यापक नहीं है।" (सा०स० पृ० ५५)

"परमात्मा का मुख्य नाम शिव है।" (सा० स० पृ० ५६) परम पिता शिव भी ब्रह्मलोक वासी है वहां से ही वह धर्म ग्लानि के समय इस मनुष्य सृष्टि में आते हैं और मनुष्यात्माओं को ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हैं। पिता और शिक्षक कभी सर्वव्यापी नहीं होता है। (सा० स० पृ० ५८)

"शिवलिंग परमात्मा के स्वरूप की यादगार है स्वयं हमारे यहां अनेकों ने परमात्मा के इस दिव्य स्वरूप का साक्षात्कार किया है।" (सा० स० पृ० ५६) "परमात्मा के सर्वज्ञ होने के लिए अनन्त असीम होना आवश्यक नहीं है। (सा० स० पृ० ६०) "यह सृष्टि अनादि है। इसमें परिवर्तन तो होता है परन्तु सारे जगत का कभी परमाणु रूप नहीं होता। कल्प के अन्त में इसका महाविनाश ही होता है न कि पूर्ण विनाश।" (सा० स० पृ० ६४) "भला बताइये कि अगर परमात्मा सर्वव्यापक है तो शरीर में से आत्मा निकल जाने पर परमात्मा तो रहता ही है तब उस शरीर में चेतना क्यों नहीं प्रतीत होती ?" (सा० स० पृ० ६५) शिरोमणि शास्त्र गीता से स्पष्ट है कि भगवान सर्वव्यापक नहीं है। गीता से स्पष्ट है कि परमात्मा अवतार लेते हैं।" (सा० स० पृ० ६६) हमने ब्रह्मलोक का भी कई बार दिव्य साक्षात्कार किया है.... जबकि मनुष्यात्मा भी मुक्ति प्राप्त करके ब्रह्मलोक को जाना चाहती है तो सदामुक्त परमात्मा भला इस जीवनबद्ध संसार में क्यों व्यापक होंगे ? जबकि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर भी इस संसार के ऊपर अपनी अपनी देवपुरियों में निवास करते हैं तो परमात्मा शिव जो इन तीनों के रचयिता हैं....इस मनुष्य लोक में क्यों व्यापक होंगे ?" पृष्ठ ६८। स्वयं को आत्मा निश्चय करो। मन को ले जाओ सूर्य और तारागण के भी पार परमधाम में जहां ब्रह्म नामक अखण्ड प्रकाश तत्व है। उस शान्ति धाम में ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव रहते हैं।"७६॥

उत्तर— परमात्मा के सम्बन्ध में उक्त उदाहरण जो हमने ब्रह्माकुमारियों की मान्य पुस्तकों से दिए हैं यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि इन लोगों ने ईश्वर के बिषय में सारी ऊटपटांग कल्पनायें की हैं। इनको न तो तर्क शास्त्र का ज्ञान है और न वैदिक दर्शन को जानकारी है। इनकी कल्पना का आधार गीता की ऊट-पटांग कल्पना है जिसमें ब्रह्मलोक को स्थान विशेष एवं श्रीकृष्ण का परमधाम बताया गया है और वहीं मुक्तात्मा का सदैव रहना गीता ने लिखा है। गीता ने ईश्वर को एकदेशीय सत्ता माना है श्रीकृष्ण को साक्षात परमात्मा व मोक्ष देने वाला माना है अवतार लेना माना है उसी की नकल में ब्रह्माकुमारी सम्प्रदाय ने अपने गुरू लेखराज कृपलानी (सिन्धी) को परमात्मा का अवतार ब्रह्मलोक वासी, एकदेशीय, मोक्षदाता मान लिया है। गीता ने ईश्वर को सर्वव्यापक नहीं माना है, उसी प्रकार यह सम्प्रदाय भी ईश्वर को सर्वव्यापक नहीं मानता है। गीता ने ईश्वर को सम्पूर्ण भूतों (प्राणियों) के हृदय में विद्यमान माना है, किन्तु यह सम्प्रदाय, गीता की इस बात को मिथ्या मानते हैं क्योंकि इससे इसके पाखण्ड का खण्डन हो जाता है।

हमें यहां ईश्वर की सर्वव्यापकता पर विचार करना है। सर्वव्यापक का अर्थ है कि जो सर्वत्र, सारे विश्व में कण-कण में विद्यमान हो, उसे सर्वव्यापक कहते हैं। एकदेशीय का अर्थ है कि जो किसी एक स्थान पर रहता हो, देश की सीमा से आबद्ध हो। यह दोनों स्थितियां परस्पर विरुद्ध हैं। जो एकदेशीय होगा वह सर्वव्यापक न होगा और जो सर्वव्यापक होगा वह एकदेशीय नहीं हो सकता है।

वेदादि समस्त शास्त्रों में परमेश्वर को सर्वव्यापक माना है सर्वव्यापक होने से ही परमात्मा, सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी अनन्त विश्व का सृजक, पालक, पोषक एव संचालक हो सकता है। यह विश्व अनन्त है, इसमें करोड़ों कल्पनातीत सूर्य व लोक लोकान्तर स्थित हैं।

सभी लोक अपने २ स्थान पर निश्चित नियमों के अनुसार गति करते हैं कभी भी आपस में नहीं टकराते हैं। यदि इनको कोई सर्वव्यापक सत्ता धारण करके नियमित रूप से गतिशील न रखने वाली होवे तो इनका परस्पर में टकराना अनिवार्य हैं। विश्व के प्रत्येक कण में प्रतिक्षण वैज्ञानिक नियमों के अनुसार क्रिया होती रहती है जो कि अपने में व्यापककर्ता का अस्तित्व स्पष्ट करती है। प्रत्येक जड़ व चेतन पदार्थ में उत्पत्ति कलात्मक रचना संरक्षण अथवा विनाश की क्रिया प्रतिक्षण चालू देखी जाती है जो क्रिया बुद्धिमान रचयिता वा कर्ता के व्यापकत्व को सिद्ध करती है। जगत में सर्वत्र व्यवस्था है, नियम है। नियम एवं व्यवस्था अपने में व्यापक व्यवस्थापक को प्रकट करती है। नियम व व्यवस्था रखना चैतन्य का गुण होता है और यह बताता है कि जगत के प्रत्येक कार्य को नियम में रखकर चलाने वाला एवं उसकी व्यवस्थापक चेतन्य एवं ज्ञानवान सत्ता है। वह सत्ता इतनी महान है कि अनन्त विश्व को नियम में रखती है, प्रत्येक परमाणु को वश में रखकर उससे काम लेती है। तो वह परम सूक्ष्म भी स्वय सिद्ध है क्योंकि परमाणु को वश में रखना, उसके भी अन्दर गति पैदा करना उसी की सामर्थ में होगी जो उससे भी सूक्ष्म व उसमें व्यापक होगा। अतः परमात्मा की सत्ता सर्वव्यापक, परम सूक्ष्म एवं विश्व की रचियता, उसे नियन्त्रित एवं धारण करने वाली भी स्वयंसिद्ध है। एकदेशीय (एक जगह रहने वाली) सत्ता के लिए यह सब असम्भव होगा। अतः ब्रह्माकुमारियों की परमात्मा को सर्वव्यापक न मानने की कल्पना मिथ्या है।

उनका एक तर्क है कि शरीर में से जीवात्मा के निकल जाने के पश्चात यदि परमात्मा सर्वव्यापक होता तो मृतक शरीर चेतन्य रहना चाहिये था अर्थात शरीर का मृत हो जाना ईश्वर की व्यापकता सिद्ध नहीं करता है। हमारा कहना है कि जीवात्मा के निकल जाने के पश्चात

यदि परमात्मा की शरीर में व्यापकता न हो तो शरीर ज्यों का त्यों पड़ा रहना चाहिये। किन्तु हम देखते हैं कि जिस परमेश्वर ने जीवात्मा को रहने के लिये पंच भूतों से शरीर बनाकर दिया था जीवात्मा के निकल जाने के बाद वही परमात्मा उस शरीर को पुनः पंचभूतों में परिवर्तित करने के लिये तत्काल क्रिया प्रारम्भ कर देता है और शव में उसके विनाश की क्रिया तुरन्त प्रारम्भ हो जाती है। निश्चित नियमों के आधार पर निरन्तर शव में विनाश की क्रिया का होते रहना यह सर्वव्यापक परमेश्वर के उसमें होने का पुष्ट एवं स्पष्ट प्रमाण है जिसे सभी बुद्धि रखने वाले समझ सकते हैं।

यह कहना कि पिता पुत्र में व्यापक नहीं होता है बच्चों की सी बात है। जो यह प्रगट करती है कि इनका सम्प्रदाय प्रवर्तक साधारण सी बुद्धि भी नहीं रखता था। पिता व पुत्र या गुरू शिष्य दो पृथक एक देशीय सत्तायें हैं। पिता पत्नी में बीजाधान करके सन्तान के शरीर निर्माण के लिये आधार बनाता है। राज मजदूर ईंटों से मकान बनाते हैं, रसोइया आटे से रोटी बनाता है लेखक कलम से किताब लिखता है, सैनिक बन्दूक से गोली मारता है, इनके बारे में कर्त्ता को कार्य में व्यापक होने का प्रश्न उठाना साक्षात पागलों जैसी बातें हैं।

रचना दो प्रकार की होती हैं। एक में कर्त्ता बाहर से रचना करता है जैसे कुम्भकार घड़े को बाहर से बनाता है वह मिट्टी के कणों में व्यापक नहीं होता है यह रचना जीवों द्वारा होती है। दूसरी रचना भीतर से होती है जैसे बीज से वृक्ष, गर्भ में बालक के शरीर की रचना आदि। अन्दर से होने वाली रचना में कर्त्ता का व्यापक होना अनिवार्य होगा। यह रचना परमेश्वर के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। ईश्वर को सर्वव्यापक सिद्ध करती है। ब्रह्माकुमारी सम्प्रदाय वालों में थोड़ी भी अकल होती तो ऐसी पागलपन की दलील पेश न करते।

संसार के प्रत्येक पौधे, वृक्ष, फल, फूल, पक्षी, जीव, जन्तु की रचना

में सौन्दर्य है । कलात्मक रचना है और उस सौन्दर्य एवं रचना में उपयोगिता का रहस्य विद्यमान दीखता है जो कि अपने महान कलाकार रचयिता परमेश्वर का परिचय देता है । प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को ईश्वर का अस्तित्व रचना में दीखता है । नास्तिक व मूर्खों की बात दूसरी है ।

परमात्मा शिक्षा देने जब चाहे आ जाता है यदि यह सत्य है तो मुसलमानों की मान्यतानुसार कुरान हंसामत का हंसयोग प्रकाश आनन्द मार्ग के अवतार प्रभात रंजन सरकार उर्फ आनन्द मूर्ति को पुस्तकों की सामग्री तुम्हारे मत के विरुद्ध क्यों है ? वह सब एक जैसी होनी चाहिए थी क्योंकि परमात्मा के ज्ञान में विरोध नहीं होता है । ये सभी अवतार परमात्मा बनने के दावेदार हैं । स्वप्न में सभी शेखचिल्ली लोग परमात्मा व स्वर्ग लोक का दर्शन रोज करते हैं तो तुमने भी यदि ख्वाब देखे हैं तो इसमें शेखी मारने की क्या बात है ? तुम उनसे किसी बात में कम नहीं हो ।

महाभारत तथा केदार कल्प पुराण से सिद्ध हैं कि हिमांचल के राजा-ब्रह्मा, मानसरोवर के राजा को – विष्णु, भूटान के राजा को – शिवजी तथा तिब्बत के राजा को - इन्द्र कहते थे । उन राजाओं की ये उपाधियां होती थीं । वे इसी पृथ्वी के निवासी होते थे । आसमान में उनके रहने की कल्पना इतिहास विरुद्ध होने से आपकी मिथ्या है तथा इन तीनों पहाड़ी राजाओं को पैदा करने वाला होने से परमात्मा को त्रिमूर्ति शिव कहना तुम्हारी कम अक्ल व पाखण्ड है ।

ध्यान के समय सूर्य और तारागणों के उस पार मन को ले जाने की बात लिखना भी मूर्खता की बात है क्योंकि अनन्त आकाश में तारागणों का विस्तार एवं असंख्य सूर्य लोकों की विद्यमानता विज्ञान द्वारा अत्यन्त बलशाली बड़ी दूरबीनों के माध्यम से देखकर सिद्ध की जा चुकी है । तब अनन्त तारागणों के उस पार ध्यान करने की बात मिथ्या हो जाती है । उनका ध्यान भी उनकी अज्ञानता का द्योतक है ।

रही गीता की बात ! तो आप भी गीता को सत्य नहीं मानती हैं। अपनी पुस्तक साप्ताहिक सत्संग के पृष्ठ ६७ में लिखा है – "गीता में कई वाक्य बाद में मनुष्यों ने मिलाये हैं" जब आप गीता को प्रमाणिक नहीं मानती तो प्रमाण देने का आपको अधिकार नहीं हैं। जहां तक हमारी बात है हमारी निगाह में गीता तो स्वयं कोई प्रमाणिक धर्म पुस्तक नही है *। यदि उसने ईश्वर को सर्व व्यापक नहीं माना है तो उसकी गलती है, उसका प्रमाण देना भी उन्मत्त प्रलापवत है। गीता ने ईश्वर को ब्रह्मलोकवासी एकदेशीय माना है जो कि मिथ्या कल्पना पर आधारित है एवं तर्क से भी सिद्ध नहीं किया जा सकता हैं। एक देशीय सत्ता नित्य सर्वज्ञ भी नहीं हो सकती है। ससीम का ज्ञान व शक्ति भी ससीम होगी। अनन्त जगत को धारण करने वाला भी अनन्त होगा। और तभी उसका ज्ञान भी नित्य एवं अनन्त होगा। ब्रह्मा-कुमारियों का कल्पित ईश्वर यदि परमाणु रूप है। और सूर्य के उस पार कहीं बैठा या लेटा रहता है तो वह हमारे लिए सर्वथा विदेशी एवं बहिष्कार के योग्य होगा। वह जीवों के कर्मों की भी जानकारी नहीं रख सकेगा न कर्मानुकूल यथावत् न्याय व्यवस्था कर सकेगा। चन्द्रमा हमारी पृथ्वी से टकरा जावेगा। सारे विश्व में नियम एवं व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रहेगी। ऐसी सत्ता परमात्मा नही मानी जा सकेगी।

ब्रह्माकुमारी— "अगर परमात्मा सभी में व्यापक होते तो फिर परमात्मा को विशेष रीति से याद करने की आवश्यकता ही क्यों होती? याद उसी को किया जाता है जो सर्वव्यापक न हो ?" (सा० पृ० ७५)

उत्तर—यह तर्क उक्त पुस्तक के लेखक की नासमझी को प्रकट करता है। उसे 'याद' किया जाता है जिसे 'भूला' दिया गया न हो या जिनकी जानकारी न हो। चाहे वह व्यापक हो या पृथक हो ! परमात्मा के सर्व-व्यापकत्व को भूल जाने से ही तो मनुष्य पाप में प्रवृत्त होता है। अपने

नोट- *इस विषय में हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तक- "गीता में ईश्वर का स्वरूप" अवश्य मंगाकर पढ़ें — "सम्पादक"

को अकेला असहाय समझता है। जो ईश्वर को सर्वव्यापक अनुभव करते हैं वे सदा निर्भय, आत्मिक दृष्टि से सबल, भूत, भविष्यत् के जानने वाले वाक सिद्ध व्यक्ति हो जाते हैं, सर्व पापों से मुक्त रहते हैं। अनीति नहीं करते हैं। ब्रह्माकुमारियों के समान अज्ञान में ग्रसित नहीं रहते हैं। उनका यह कहना कि धर्म ग्लानि के समय परमात्मा पृथ्वी पर आता है वैसे सदा आसमान में ऊपर बैठा रहता है, यह भी उनकी अज्ञानता का द्योतक है। धर्म ग्लानि और धर्म में आस्था सदैव विभिन्न मनुष्यो में पाई जाती है किसी युग विशेष में ग्लानि होती हो यह कल्पना ही निराधार है। द्वापर में भी पापी व पुण्यात्मा सभी थे उसके बाद भी हैं उससे पूर्व भी रहे थे। आज भी गंगा पर, पर्वों पर, जनता की अपार भीड़ देखी जा सकती है। जो जनता में उनके विचार के अनुसार धर्म में आस्था की द्योतक है। कुम्भ के मेलों पर लाखों करोड़ों मनुष्यों की उपस्थिति धर्म ग्लानि वाली कल्पना को निर्मूल सिद्ध करती है।

गीता को शिरोमणि शास्त्र लिखना भी ब्रह्माकुमारियों में शास्त्रीय ज्ञान का अभाव सिद्ध करता है। गीता ने (वेद को अ० ३।२५ व १७।२३ व ६।१२ तथा १०।२२ में अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान) माना है। तब शिरोमणि शास्त्र वेद हुए न कि गीता! संस्कृत ज्ञान से शून्य, बुद्धि के शत्रु इस सम्प्रदाय वालों को सत्य शास्त्रों का ज्ञान हो ही नहीं सकता है।

इनका ब्रह्मलोक के दिव्य साक्षात्कार की बात कहना भी उन्मत्त प्रलापवत है। स्वप्न में कल्पना के अनुसार देखी गई सभी बातें व दृश्यों का अस्तित्व नहीं होता है। वे कल्पना के अनुसार अधिकतर स्वप्न के अप्रमाणिक चित्रण होते हैं। उन्हीं को सत्य मानना अज्ञानता की पराकाष्ठा है।

सृष्टि को जीवन बद्ध (बन्धन वाली) बताना भी उनका पागलपन है। सृष्टि तो जीवों का कर्मक्षेत्र है जिसमें वे पुरुषार्थ करके दिव्य सुखों का अनुभव करते हैं और जीवन का आनन्द भोगते हैं। यदि सृष्टि न

होती तो सारे जीव निकम्मे, आलसी बने हुए शून्याकाश में पड़े रहते। उनकी शक्तियों को विकास का अवसर भी न मिलता। ऐसे आनन्द मय जगतको बन्धन का हेतु बताना, दीवानापन नहीं तो और क्या है ? क्या ब्रह्माकुमारियों का खुदा यहां रहने से डरता है ? यदि डरता है तो वह ईश्वर ही नहीं है कोई उन्ही जैसा ढोंगी होगा।

कोई भी बुद्धिमान मनुष्य किसी फर्जी ब्रह्मलोक में नहीं जाना चाहता है। मुक्त होने का अर्थ जीवन मरण के चक्र से छूटकर परमेश्वर के आनन्द का उपभोग करते हुए अनन्त विश्व में भ्रमण करने का सुअवसर प्राप्त करना होता है न कि सूर्य के ऊपर किसी स्थान पर पलंग पर पड़े रहने वाले ब्रह्माकुमारियों के अण्डे जैसे फर्जी परमात्मा के पास जाना।

जैनियों की तरह ही ब्रह्माकुमारियों ने मान रक्खा है कि सृष्टि अनादि है। उसे कभी किसी ने न तो बनाया था न कभी उसका पूर्ण विनाश ही होगा।

यह कल्पना भी तर्क प्रमाण एवं विज्ञान के विरुद्ध है। जिस वस्तु का निर्माण परमाणुओं के संयोग से हुआ है वह अनादि नहीं हो सकती है। संयोग किसी के द्वारा होता है तथा किसी काल विशेष में होता है। जब उनका संयोग होकर वस्तु बनती है तो उसकी आयु वहीं से निश्चित हो जाती है। वह उत्पन्न हुई कहाती है तथा जिन परमाणुओं में जितने समय तक जिस रूप में स्थिति रहने की शक्ति होती है उतने समय तक वह वस्तु स्थिति रहती है। परमाणुओं की उस रूप स्थिति में रहने की शक्ति का ह्रास हो जाने पर वह वस्तु विनष्ट हो जाती है और उसे ही उस वस्तु की प्रलय कहते हैं।

इसी प्रकार हमारी सृष्टि भी परमाणुओं के संयोग से बनी हुई है। जब भी परमाणुओं का संयोग हुआ था तभी पृथ्वी बनी थी। जब

उनकी इस रूप में रहने की शक्ति नष्ट हो जावेगी उन्हें प्रथक २ कर दिया जावेगा और पृथ्वी की पूर्ण प्रलय हो जावेगी। सृष्टि रचना से पूर्व परम णु थे तथा उनसे विधाता ने सृष्टि की रचना की थी। परमाणु जड़ है उनमें स्वय रचना ज्ञानपूर्वक करने की सामर्थ्य का अभाव है। जैसे आटा स्वयं रोटी नहीं बन जाता है, आटे से रोटी दूसरा ही चैतन्य व्यक्ति बनाता है, उसी प्रकार परमेश्वर ने परमाणुओं (पंचतत्वों) से सृष्टि बनाई थी। स्वयं सृष्टि शब्द का अर्थ भी तो बनी हुई होता है, जो कभी बनी ही न हो उसे सृष्टि नहीं कहते हैं। जगत शब्द भी ज+गत इन अक्षरों से बनता है। जिसका अर्थ भी ज= उत्पन्न होना तथा गत = नष्ट होना, अर्थात उत्पन्न होकर विनष्ट होने वाला होने से ही इस विश्व को जगत कहते हैं। यह शब्द स्वयं पृथ्वी व जगत को उत्पत्ति विनाशधर्मा बताते हैं। तब इन ब्रह्माकुमारियों का घोर अज्ञान प्रगट हो जाता है जब ये सृष्टि और जगत शब्दों का भी प्रयोग करती हैं और उनके अर्थों को भी नहीं समझती हैं। इनके कुपढ़ होने का यह भी प्रमाण है।

'परमात्मा कौन है' पुस्तक से— इस सम्प्रदाय की एक अन्य पुस्तक है जिसका नाम है "परमात्मा कौन है ?" उसमें भी ऐसी ही बकवास की गई है जिनका पीछे उत्तर दिया गया है। कुछ नई बातें भी कहीं हैं जिनको हम नीचे देते हैं -

"क्या शरीर और वृक्ष परमात्मा पैदा करता है ? शरीर सदा से माता पिता के संयोग अथवा संभोग ही से पैदा होता आया है। दोनों प्रकार के जीवाणु मिलकर और बाद में बहुसंख्यक होकर कार्य बांट कर आंख, कान, नाक आदि शरीर भाग अथवा शरीर बनाते हैं। जब मधु-मक्खी अपने लिए छत्ता बना सकती है तो क्या अनेकानेक जीवाणु मिल कर शरीर नहीं बना सकते हैं ?" ।।पृ० २७।। निराकार परमात्मा ने सूर्य,

चन्द्र जगत बनाया, यह गलत विचार हैं।" पृ० ३० 'पहिले सन्तान की उत्पत्ति योग बल से होती थी न कि भोग या मैथुन से। पृ० ४० ? मनुष्य जो कर्म करता है उसके फलस्वरूप जो प्रतिक्रिया होती है उसका प्रभाव लौटकर मनुष्य पर पड़ता है। इसमें किसी फल देने वाले की आवश्यकता नहीं है। पृ० ४०। परम पिता परमात्मा ज्योति बिन्दु शिव कलियुग के अन्त में परम धाम से अवतरित होकर एक साधारण मनुष्य के तन में दिव्य प्रवेश करते हैं और उसका नाम रखते हैं "प्रजा पिता ब्रह्मा।" उसके द्वारा ही वे सृष्टि को कलियुगी से सतयुगी बनाते हैं ।।पृ०४६।।

उत्तर—जो तर्क ऊपर विपक्षी की पुस्तक में दिया गया है सम्भवतः उससे अधिक मूर्खतापूर्ण बात कोई दूसरी नहीं कही जा सकती है। यह लेख प्रगट करता है कि इस सम्प्रदाय का प्रवर्तक पूरा शेखचिल्ली था, वह बिलकुल कुपढ़ था। विद्या की कोई बात उसे नहीं आती थी।

चिकित्सा विज्ञान से सिद्ध है कि संभोग के पश्चात केवल एक ही वीर्य कीट नारी के गर्भाशय में स्थित रजडिम्ब से मिलकर गर्भ की स्थापना का कारण बनता है न कि सैंकड़ों कीड़े मकोड़े गर्भ में जाते हैं। गर्भ स्थिति के पश्चात गर्भ विकास का क्रम प्रारम्भ होता है, और अनेक रूपों में परिवर्तित होते हुए अन्त में पूर्ण मानवीय बालक का रूप बन पाता है। गर्भाधान के पश्चात गर्भाशय की गर्मी से गर्भ परिपक्व होता है और ४८ घण्टे के पश्चात गर्भ एक तार के द्वारा गर्भाशय के शरीर की भित्ति से जुड़ जाता है ओर माता के शरीर का अंग बन जाता है तथा उसी समय से माता के शरीर से उसी तार (नाल) के द्वारा जीवन शक्ति भोजन आदि गर्भ को प्राप्त होता है जिससे गर्भ का क्रमिक विकास प्रारम्भ होने लगता है।

गर्भस्थ शिशु के शरीर के अवयवों का निर्माण सर्वव्यापक परमेश्वर के द्वारा होता है न कि कीड़ों के द्वारा होता है। उस निर्दोष शरीर में

कीड़े पड़ जावेंगे तो गर्भ सड़ जावेगा एवं माता की भी मृत्यु सम्भव हो जावेगी। कोई भी कीड़ा ब्रह्माकुमारी सम्प्रदाय में रह कर नाना विज्ञानयुक्त शरीर रचना करना नहीं सीखता है। दिव्य वा अत्यन्त प्रबुद्ध मस्तिष्क, बड़े से बड़ा वैज्ञानिक आज तक शरीर के एक भी अवयव के निर्माण की वैज्ञानिक क्रिया को नहीं समझ पाया है और न समझ सकता है। क्या विश्वभर का कोई व्यक्ति बाल की रचना का प्रकार बता सकता है? क्या कोई जान सकता है कि दांत पर जो पोलिश होती है वह किस प्रकार बिना भट्टी के हो जाती है? क्या कोई मनुष्य के नाखून या त्वचा को विज्ञान की प्रयोगशाला में बना सकता है? क्या ब्रह्माकुमारियां बता सकतीं हैं कि उनके शरीरों में विभिन्न अंगों में किस समय क्या रसायनिक प्रक्रियायें होती हैं? यदि अपना शरीर मूर्छित अवस्था में उन्होंने अपनी अम्मा के गर्भ में बना लिया था और कोई चीमटी, हथोड़ा, चाकू आदि की उन्हें जरुरत नहीं पड़ी थी तो अब अपने हाथों से वे शरीर का कोई भी अंग बनाकर दिखा देवें। मां को तो इतना भी होश नहीं रहता है कि गर्भ रहने पर वे यह भी बता सकें कि उसके पेट में लड़का है या लड़की?

शरीर रचना की भी उनकी बेवकूफी की कल्पना है। क्या उनके शरीर में गर्भाधान के बाद गर्भाशय में कीड़े पड़ जाते हैं? और वे कीड़े कान्फ्रेंस करके आपस में तय करते हैं कि कौन कीड़ा कौन सा अंग बनावेगा? क्या कोई ब्रह्माकुमारी बता सकती है कि जब वह अपनी मां के पेट में कीड़ा बनके घुसी थी तो उसने अपने शरीर का कौनसा हिस्सा और किस प्रकार बनाया था? और उसके लिए किन-किन औजारों व मसालों की जरुरत उसे पड़ी थी तथा वह सब सामान क्या वह साथ लेकर घुसी थी?

उनका यह कहना कि पहिले सन्तान विषय भोग से न होकर योग

बल से होती थी डबल मूर्खता की बात है। वीर्य तत्व पुरुष शरीर में बनता है वह भी भोजन करने के चालीस दिन बाद बनता है तथा बिना मैथुन के वीर्य का गर्भाशय में जाना सम्भव नहीं है। कृत्रिम साधनों से भी वीर्य को गर्भाशय में प्रविष्ट किया जा सकता है तथा गर्भ, रज वीर्य के मिलने पर ही ठहरता है। भारत के या विश्व भर के किसी भी मान्य धार्मिक साहित्य में इससे भिन्न गर्भाधान का प्रकार नहीं माना गया है। योगी जन समाधिस्थ होकर परमात्मा का चिन्तन कियाकरते हैं न कि ब्रह्माकुमारियों के गर्भाशय में योगबल से घुसकर ! गर्भाधान किसी भी युग में किया करते थे। न सारे हां मनुष्य ससार में कभी पूर्ण सिद्ध योगी होते थे। देव दानव सभी सदैव होते थे, तथा मैथुन ही गर्भाधान का एकमात्र प्राकृतिक प्रकार सदा से था व सदा रहेगा। क्या दानव राक्षस भी योगी होते थे और योग से बच्चे बनाया करते थे ? श्रीमती ब्रह्माकुमारियों ! योगी इसलिए नहीं बनते हैं कि नारियों के गुप्तांगों में प्रवेश करके बच्चे बनाया करें। भारतीय योगी दादा लेखराज जैसे पापी नहीं होते हैं जो नौजवान औरतों को छाती से चिपटा कर उनको अपवित्र करता रहता था। तुमने भी तो दादा लेखराज के सीने से चिपटकर उससे प्रगाढ़ आलिंगन कराकर आनन्द का स्वाद लिया था ईमानदारी से सच सच बताना तुम्हें लेखराज की कसम है कि उस समय लेखराज की व तुम्हारी भावनाओं में कामदेव जागा करता था या नहीं। पराई जवान औरतों को भुजाओं में कसकर सीने से लगाकर प्रगाढ़ आलिगन करना बदमाशों का काम होता है, शरीफ लोगों का नहीं।

तुमको शर्म आनी चाहिये कि मूर्खतापूर्ण बातें अनाड़ियों को सुना सुनाकर तुम लेखराज जैसे आदमी को परमात्मा का अवतार बताकर औरतों को गुमराह करती फिरती हो।

यदि वृक्षादि परमात्मा नहीं बनाता तो क्या तुम पैदा करती हो ? क्या तुम या संसार का कोई भी व्यक्ति यह बता सकता है कि नीम के पत्तो के रस में जो अगणित गुण होते हैं उसका निर्माण कौन व किस प्रक्रिया से कर देता है ? खुदाई का दम भरने वाला लेखराज एक नीम या इमली का पत्ता भी क्यों न बनाके दिखा सका था ?

ब्रह्माकुमारियों ! जो काम परमेश्वर के कार्य क्षेत्र में है उनको जीव नहीं कर सकता है और जो जीव के कार्य क्षेत्र में है उन्हें ईश्वर नहीं करता है। जिनकी रचना अन्दर से होती है उनकी रचना परमात्मा द्वारा होती है और जिनकी रचना बाहर से होती है उनको जीव बनाते हैं। इस रहस्य को तुम्हारे शेखचिल्ली सम्प्रदाय की प्रचारिकायें व तुम्हारा पाखण्डी गुरु लेखराज भी नहीं समझ पाया था। वरना ऐसी मूर्खतापूर्ण पुस्तकें लिखकर तुम बेचारी जनता में अपने को उपहास का पात्र नहीं बनाती तुमको प्राचीन युगों की बात करने का अधिकार भी नहीं है क्योंकि तुम्हारा सम्प्रदाय पाकिस्तान बनने के बाद सन् ५३ से चलाया गया है। न तो तुम प्राचीन भारतीय साहित्य को मानती हो और न तुम्हारे पास प्राचीन साहित्य प्रमाण देने को है। तुम्हारा पाखण्ड केवल १५-२० साल का है अतः सतयुग, त्रेता, द्वापर आदि की बातें करना तुम्हारी नादानी है।

पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र आदि सभी परमाणुओं से बने होने से कार्य है, और कार्य बिना कर्त्ता के नहीं होता है। अतः इन सबका पैदा होना व परमेश्वर का उनका कर्त्ता होना स्वयं सिद्ध है। तुम्हारे सारे सम्प्रदाय में एक भी पढ़ा लिखा आदमी होता तो ऐसी बेवकूफी की बातें तुम्हारी किताबों में लिखी न मिलतीं।

प्रत्येक मनुष्य कर्मों का फल भी स्वयं नहीं भोगता है कर्म मनुष्य करता है, फल व दण्ड दूसरा ही उसे देता है। प्रत्यक्ष में भी दोषी

व्यक्ति राज्य द्वारा दण्ड पाते हैं स्वयं न वे जेल ज ते हैं, न फांसी पर लटकते हैं। पापी पाप करने के बाद उसके परिणाम से बचने का प्रयत्न करता है। किन्तु न्याय सत्ता उसे दण्ड देती है। ऐसे ही जीवों के कर्म फलों की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा होती है यदि आप भी परमेश्वर विरोधी बनी रहोगी तो आपको भी कुत्ते कुतिया आदि की पशु योनि में आगे जन्म मिलेगा जो कि अज्ञानियों के लिए निश्चित हैं।

अपने लिए चूहा विल पैदा होने के बाद बनाता है मधुमक्खी छत्ता बनाती है, बाया घौंसला बनाता है, मनुष्य मकान बनाता है, यह सब शरीर प्राप्त जीव अपनी बुद्धि के बल पर बनाते हैं किन्तु अपने शरीरों का निर्माण वे नहीं करते हैं। शरीर रूपी कैदखाने में पूर्व स्वकृत कर्म-फल भोगने को जीवों को परमात्मा प्रविष्ट कर देता है। ये शरीर रूपी मकान परमेश्वर द्वारा निर्मित होते हैं। यही अकाट्य सत्य सिद्धांत है। क्या आप सारी ब्रह्माकुमारियां मधुमक्खी का छत्ता जैसा वे बनाती हैं वैसा बना सकती हैं। आपमें मक्खी से ज्यादा अकल होगी ही ? बनाकर दिखा देवें तो हम मान लें कि माता के गर्भ में आप अपना शरीर भी बना लेंगीं तथा अपने जिस्म में एक आंख बनाकर दिखा दें तो हम मान लेंगे कि आपने ही अपना शरीर बना लिया होगा, चुनौती स्वीकार करें।

ब्रह्माकुमारियो ! तुम अभी ज्ञान के विषय में बच्ची हो। तुम जब साधारण सी बातों को भी नहीं समझ सकती हो और लेखराज द्वारा बहका दी गई हो तो ईश्वर के बारे में तुम कुछ भी नहीं समझ सकती हो। जब तुम्हारा फर्जी त्रिमूर्ति शिव कहीं ऊपर आसमान में बैठा रहता है यहां पृथ्वी पर नहीं रहता है, तो ऐसे परदेशी खुदा के मानने से कोई लाभ नहीं होगा। यदि वह यहां आकर रहने लगे तो विश्वास रखो कि हम उसे गोली से नहीं मारेंगे, शीशे में बन्द करके उसे प्रदर्शनी में बैठाकर सभी को हम उसे दिखावेंगे कि यह ब्रह्माकुमारियों का

डरपोक परमात्मा है जो बहुत ऊपर आकाश में लटका रहता है। यदि हो सके तो उस अपने परमात्मा को मय उसकी बीबी के बुलवा लो। दादा लेखराज तो बुढ़ापे में मैस्मरेजम सीखकर औरतों का गुरू बना था और ऐश करते २ मर भी गया तथा तुम चेलियों को रोता बिल-खता छोड़ गया। यदि परमात्मा होता, तो मरता नहीं तथा झूठ भी नहीं बोलता। क्योंकि उसने स्वयं कहा था :-

"हे वत्स ! तू सब तरह से यहां तक कि लौकिक गुरुओं आदि से भी मन हटाकर एक मेरी शरण में आ। तू मुझ एक से प्रीति जुटा तो मैं अपनी सारी सम्पत्ति सहित तेरा हो जाऊंगा वत्स ! तू शोक मत कर मैं तुझे सभी पापों से मुक्त होने की सहजयुक्ति बताऊंगा और तुम्हें अपने परम धाम अर्थात शान्ति धाम ले चलूंगा और सुख की दुनियां अर्थात स्वर्ग में भी पवित्रता और दिव्य गुणों से युक्त राज्य दूंगा।" (साप्ताहिक सत्संग पृष्ठ ७४)

"वत्स ! क्या अब मेरी खातिर भी तुम इस अन्तिम जन्म में शेष थोड़े समय के लिए कुल आठ वर्षों के लिए भी पवित्र नहीं रह सकते ? ····परन्तु अब मैं इस कलियुगी सृष्टि रूपी वेश्यालय से निकल कर सतयुगी पावन सृष्टि शिवालय में ले जाने के लिए आया हूं—देखो मौत सामने है सब कुछ नाश हो जायेगा, देखो मैं धर्मराज भी हूं।" (सा० स० पृ० १६९)

"त्रिमूर्ति भगबान (लेखराज) उवाच अब से आठ वर्षों में सतयुगी देवी सृष्टि की पुनः स्थापना और कलियुगी आसुरी स्वभाब वाले मनुष्यों की पुरानी सृष्टि का विनाश ईश्वरीय योजना के अनुसार अभी होने को है। (सा० स० पृ० ३१) जिससे पूर्व ही आप मेरे द्वारा जन्म जन्मान्तर के लिए पवित्रता देवी देवता पद स्वर्गवास का अपना जन्म सिद्ध अधिकार मुझ स्वर्ग के रचयिता परमात्मा द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।" (सतयुग में स्वर्ग वासी कैसे बनें पुस्तक के पृ० ३३-३४)

उत्तर— उपरोक्त वाक्य ब्रह्माकुमारियों के गुरु जी दादा लेखराज ने कहे थे। दुनियां के विनाश व चेले-चेलियों के उद्धार का ठेकेदार महाझूठा लेखराज तो मर भी गया किन्तु दुनियां जैसी की तैसी चल रही है। जब लेखराज परमात्मा बनता था और सृष्टि का विनाश कराने व चेलियों को स्वर्ग अपने साथ ले जाने को आया था और वैसा ही उसने घोषणा भी की थी तो हर हालत में उसे जल्दी नहीं मरना था अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी थी। उसकी सभी समझदार चेलियां व चेले उसे सौ सौ बार धिक्कारती होंगी कि कम्बख्त धोखा दे गया और हमें रोता पीटता छोड़ गया। झूठे परमात्मा बनने की पोल पट्टी जल्द ही खुल जाती है। लेखराज की भी धोखेबाजी की कलई उसके मर जाने से स्पष्ट हो जाती है। उसे अपने मरने के समय का भी पता नहीं लग सका, कैसा ढोंगी परमात्मा था ?

दादा लेखराज सिन्धी बड़ा चतुर व्यक्ति था। पहिले उसने ओम मन्डली करांची में सन् १९३७ में खोली थी। भले परिवारों की युवती स्त्रियों को योग सिखाने के बहाने बुलाकर उनको मैस्मेरेजम से प्रभावित करके अनेकों घर उसने उजाड़ दिये थे आर्य समाज व जनता के आन्दोलन करने पर सरकार ने उसके पाखण्ड को रोककर उसे दण्डित किया था। तब खुदा बनने का सारा नशा ठन्डा पड़ गया था फिर वह छूटने पर भारत विभाजन के बाद आबू पर अपनी १५० चेलियो के साथ भाग आया था और ओम् मण्डली के स्थान पर ब्रह्माकुमारी दल बना लिया था। अब उसके मरने के बाद ब्रह्माकुमारी नाम से पाखण्ड फैल रहा है, जो लेखराज बूढ़ा होकर स्वयं मर गया। अपना भी कल्याण नहीं कर सका न अपने मरने का समय ही जान सका वह बेचारा औरों का कल्याण क्या करेगा। जीवन में जिसने कोई विद्या की बात नहीं कही लोगों को धोखा देता रहा, झूठ बोलता रहा। मरने पर उसकी बातों

पर विश्वास करके उसका सम्प्रदाय चलाना भारी शरारत नहीं तो क्या है। ब्रह्माकुमारियों ? लेखराज के इस पाखण्ड से दूर हो जाओ वरना सुन्दर जवानी तो तुम्हारी जैसे तैसे कट जावेगी किन्तु बूढ़ी होने पर तुम्हें कोई टके सेर भी नहीं पूछेगा यदि यह सृष्टि वैश्यालय है तो उसमें (वैश्यालय में) में रहने वाली सभी ब्रह्माकुमारियां भी साक्षात वैश्यायें होनी चाहिए। क्या यह सत्य है ?

ब्रह्माकुमारी—प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि की पुनः स्थापना और शंकर द्वारा कलियुगी सृष्टि का महा विनाश कराने के अतिरिक्त परमात्मा विष्णु द्वारा सतयुगी और त्रेता युगी सृष्टि का पालन कराते हैं। (सा० स० पृ० ६१)

उत्तर— यदि यह बात सत्य थी तो तुम्हारा परमात्मा ब्रह्मा बन कर क्यों आया था ? उसे तो शंकर को भेजकर पहिले विनाश करा डालना था उसके बाद जब कभी सृष्टि की पुनः स्थापना होती तो स्वयं ब्रह्मा बनकर आ जाता महाविनाश के लिए लेखराज के रूप में अपना आना बताना भी उसके झूठ का नमूना है जैसा कि उसने कहा है कि मैं विनाश कराऊंगा। उसे इतना भी होश नहीं था कि मैं पहिले क्या बक चुका हूं और अब क्या कहता हूं परस्पर विरुद्ध बातें मूर्ख लोग कहा करते हैं, विद्वान नहीं। पर झूठे लोग तो शेखचिल्ली की तरह समय २ पर वे सरपैर की गप्पें लेखराज की तरह ही उड़ाते रहते हैं।

ब्रह्माकुमारी—"प्रकृति के कार्य को परमात्मा का कार्य मानना अज्ञानता है"। ।।सा० स० पृ० ८० ।। परमात्मा तो निराकार है, कोई भी साकार वस्तु बिना इन्द्रियों अथवा स्थूल साधनों के नहीं बन सकती है तब कैसे माना जाय कि निराकार परमात्मा ने सृष्टि रची है। ।।सा०स०पृ० ८१।।

उत्तर— शक्ति निराकार होती है जीवात्मा निराकार है, परमात्मा भी निराकार है। संसार के सारे कार्य निराकार ही करता है। जड़

प्रकृति अथवा प्राकृतिक पदार्थ तो अल्प शक्तिमान जीवों के लिए कार्य करने के साधन मात्र होते हैं, जैसे कि चेतन्य जीवात्मा इस भौतिक शरीर तथा उसकी भौतिक स्थूल इन्द्रियों को साधन बनाकर कार्य करता है। संकल्प विकल्प करता है, अपने मन की बात दूसरे के मन में योगी डाल देते हैं। उन्हें उसमें भौतिक साधनों की आवश्यकता नहीं होती है। निराकार विद्युत अपनी शक्ति से सारे कारखानों को चलाती है उसी प्रकार सर्वव्यापकत्व से परमेश्वर भौतिक जगत के परमाणुओं से जगत की रचना करता है। जड़ शक्ति से नियम एव व्यवस्थानुसार बुद्धि-पूर्वक काम लेना चैतन्य सत्ता का काम होता है, स्वयं जड़ शक्ति ज्ञान शून्य होने से ज्ञानपूर्वक क्रिया द्वारा निर्माण नहीं कर सकती है। विश्व की ज्ञानमयी रचना प्रत्येक पदार्थ में दीखती है और वह ज्ञानवान विश्वव्यापी कर्त्ता परमेश्वर की कृति होने का प्रमाण स्वतः देती है। स्थूल साधनों की आवश्यकता अपने से पृथक पदार्थ के निर्माण के लिए एकदेशीय सत्ता को पड़ती है। किन्तु व्यापक का व्याप्त पर अधिकार होने से उसे किसी भी स्थूल इन्द्रिय या साधन की आवश्यकता नहीं होती है। यहां आप चोट खा गईं। आपने सैकड़ों परमसूक्ष्म साधनहीन कीटाणुओं के द्वारा गर्भस्थ शरीर रचना की बात मानी है तो बतावें कि भौतिक औजारों से शरीर की रचना करते हैं ? उनके दांत हाथ पैर आंखें कितने बड़े होते हैं ? जिनसे वे शरीर की नस नाड़ियों को पकड़ कर शरीर की रचना कर लेते हैं। तुम्हारा यह आक्षेप तो तुम्हारी ही गप्प कल्पना से कट जाता है।

ब्रह्माकुमारी— "परमात्मा को भी मुखेन्द्रिय की आवश्यकता होती है ताकि वह ज्ञान दे सके। (सा० स० पृ० ६)

उत्तर— आपकी बुद्धि कमजोर है जो जरा सी बात भी नहीं समझ पाती हैं। जब योगी मनुष्य अपने मन की बात बिना मुंह से बोले

दूसरे के मन में डाल देते हैं व दूसरों के मन की बात जान लेते हैं तो सर्वव्यापक परमात्मा भी जीवों के अन्त:करण में ज्ञान का प्रकाश बिना मुंह आदि भौतिक अवयवों के करने में समर्थ है।

आप लोगों ने एक गल्प उड़ा रखी है कि तुम्हारा शिव परमात्मा लेखराज के मरने पर अब तुम्हारी गुरुआनी के दिमाग में उपदेश डाल आता है तो क्या वह चिल्लाकर, बोलकर कहता है ? अपनी गप्प के तर्क से समझ लेवें कि परमेश्वर बिना भौतिक शरीर के जीवों को ज्ञान दे सकता है व निर्माण कर सकता है।

ब्रह्माकुमारी— सृष्टि के इतिहास की हूबहू हर ५००० वर्ष बाद पुनरावृत्ति हुआ करती है। ।।सा० स० पृ० ६३ ।।

उत्तर— यदि किसी को विद्या न आती हो तो चुप रहने से मूर्खता उसकी छिपी रहती है। किन्तु बोलने से मूर्खता प्रकट हो जाती है। झूठे लेखराज की भी बुद्धि हीनता उसकी बेतुकी कल्पनाओं से प्रगट है। भारत की सभ्यता दो अरब पुरानी है। हमारा वांग्मय लाखों वर्षों का हाल बताता है। राम, रावण को हुए प्राय: पौने नौ लाख वर्ष बीत गए। तब से आज तक पुन: राम रावण लंका का पूर्व जैसा संग्राम, राम रावण का जन्म नहीं है। श्रीकृष्ण को ५०७० साल हो गये। यदि लेखराज की गप्पाष्टक ठीक होती तो श्रीकृष्ण, अर्जुन, कौरव पांडव आज होने चाहिए थे क्योंकि पांच हजार साल से ज्यादा बीत चुके हैं। श्रीकृष्ण का अवतार यदि लेशराज होता तो उसे महा-भारत के बाद जैसे श्रीकृष्ण जी मरे थे वैसे ही उसे अब प्रलय कराकर मरना था। उसे सुदर्शन चक्रधारी महावीर योद्धा होना चाहिए था। किन्तु वह ऐश ही करता रहा : चीन व पाकिस्तान भारत पर चढ़ बैठे पर वह कहीं भी लड़ने मरने नहीं गया।

सृष्टि को अनादि मानने की भी कल्पना ब्रह्माकुमारियों की गलत

है। भूगर्भ शास्त्रियों के अनुसार पृथ्वी की वर्तमान आयु दो अरब वर्ष के लगभग है। अभी पृथ्वी बढ़ रही है। पृथ्वी की पूर्ण आयु चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष है अभी इसे दो अरब चौंतीस करोड़ वर्ष और स्थिर रहना है। भारतीय ज्योतिर्विदों ने चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष को चौदह मन्वन्तरों में बांटा है तथा एक सहस्त्र चतुर्युगियों में उसे विभक्त कर रखा है। प्रत्येक चतुर्युगी में चार युग सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग होते हैं। जिनमें कलियुग ४३२००० वर्ष, द्वापर ८६४००० वर्ष, त्रेता १२९६००० वर्ष एवं सतयुग १७२८००० वर्ष के रखे हैं। इस प्रकार इस पृथ्वी पर चारों युग १-१ हजार बार उसके स्थितिकाल में आते जाते हैं। उसके बाद पृथ्वी की पूर्ण प्रलय हो जाती है। इस समय सृष्टि संवत् १९७२९४९०८१ चल रहा है। यह सृष्टि संवत् भारतीय संवत्सर के साथ पर्व के दिन प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला एक को बदल जाता है।

यह भारतीय सृष्टि विज्ञान के आधार पर सृष्टि की आयु व युगों की गणना है जो सदैव सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक इस पवित्र देश के सभी विद्वान मानते चले आ रहे हैं। इसको न मानकर नया सम्प्रदाय चलाने के मतवाले लेखराज जैसे कुपढ़ लोग ही ५००० वर्ष का युग मानने की निराधार ऊटपटांग कल्पना कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमारी— "मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष विराट रचना के एक उल्टे वृक्ष के रूप में है। ।। सा० स० पृ० ९८ ।।

उत्तर—अब विज्ञान ने करोड़ों सूर्यों का व उनके परिवार में अरबों खरबों तारों का पता लगा लिया है। इस ब्रह्माण्ड में हमारी पृथ्वी एक अत्यन्त छोटे से पिण्ड के रूप में है। इस ब्रह्माण्ड का कोई आदि व अन्त भी नहीं है, न कोई ऊपर नीचे की बात कहीं जा सकती है। मानव चन्द्रमा पर घूम आया है। अन्य ग्रहों में जाने की तैयारी है। तब उल्टे सीधे वृक्ष की जैसी रचना सृष्टि की बताना हास्यापद नहीं तो और

क्या है ?

ब्रह्माकुमारी— "सतयुग में भगवान नारायण के तन में अवतरित होते हैं।" ।। सा० स० पृ० १०७ ।।

उत्तर—नाम सदैव सार्थक रखे जाते हैं। नारायण का अर्थ नार= जल अयन=जिसमें निवास हो। अर्थात नारायण का अर्थ है जल में रहने वाले मगरमच्छ, केकड़े आदि तब क्या तुम्हारा परमात्मा मछली बना था जिसे मांस भक्षी खा गये होंगे। तुम कल्पना तो ठीक किया करो। गप्प ठोकने को भी अकल चाहिये पर तुम्हें तो अकल से भी दुश्मनी है।

ब्रह्माकुमारी - विनाशकाल में शरीर छोड़कर आत्मायें परमधाम (ब्रह्मलोक) को लौट जाती हैं। परन्तु वहां मुक्त अवस्था से पहले रास्ते में धर्मराजपुर में उन्हें अपने रहे हुए कर्मों बुरे कर्मों के फलस्वरूप सूक्ष्म रूप में बहुत बड़ा दण्ड भोगना पड़ता है। उसके बाद ही वे ब्रह्मलोक में जाकर मुक्ति की अवस्था में रहती है" ।। सा० स० पृ० १०८ ।।

उत्तर— आपने जो विवरण पेश किया है उसके सत्य होने के पक्ष में आपने कोई प्रमाण नहीं दिया हैं और न आपके ढोंगी सम्प्रदाय की कोई ब्रह्माकुमारी वहां होकर वापिस आई है जिसने यह हाल बताया हो। पर हमारे एक मित्र ने हमको बताया है कि 'एक दिन हम रात्रि को आपके ब्रह्मलोक की सैर करने चले गए थे। रास्ते में एक होटल मिला था। हम उसी में ठहरे थे। बड़ा शानदार होटल था। सैंकड़ों ब्रह्माकुमारियां उसके चारों ओर पहरा लगा रही थीं और मुख्य द्वार पर एक बूढ़ा झाड़ू लिए सफाई में लगा था। हमको उसने बाहर ही कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। हम बैठ गये। फिर वह बूढ़ा हमारे लिये पानी लाया और हमारे उसने स्वयं पैर धोये। हमने हाथ मुंह धोया और मार्ग की थकावट मिटाई। उसके बाद वह हमें होटल के

अन्दर ले गया। बड़ा सुन्दर दृश्य था, पलंग व आराम कुर्सियां पड़ी हुई थीं, बिजली के पंखे लगे थे, इत्रों की सुगन्ध आ रही थी जो कामवासना को जाग्रत कर देती थी, हम एक पलंग पर लेट गये। बूढ़े ने अन्दर जा कर इशारा किया तो लगभग ५० सुन्दरी स्त्रियां हमारे पास आ गईं। वे सभी परम सुन्दरी मोहक अप्सरायें जैसी थीं। सभी की आंखों में काजल लगा था। सभी श्वेत धोती पहिने थीं। कोई कोई चश्मा भी लगाए थी। उनकी बोल-चाल, रहन-सहन, चाल-ढाल सभी अत्यन्त मोहक थीं। वे हमारे सामने खड़ी हो गयीं और हमसे बोलीं बताइये हम आपकी क्या सेवा करें। आप हमारे अतिथि हैं, उनको देखकर हम बहुत ही प्रभावित हुए। वे सभी हमसे आंखें लड़ाने लगीं, एकटक होकर हमारी आंखों में आंखें मिलाने लगीं। उनकी मुस्कराट अत्यन्त मोहक थीं उनमें से एक अन्दर से अत्यन्त स्वादिष्ट चाय, बिस्कुट लेकर आई और हमारे सामने मेज पर रख दी। शराब की बोतल भी हमें दी गई। हमने चाय पी व बिस्कुट खाये, शराब भी पी। एक स्त्री अण्डे की प्लेट भी लाई पर हमने उसे नहीं लिया क्योंकि हम शाकाहारी हैं। उसके बाद हम आराम करने को लेट गये वे परियां हमारे पैर दबाने लगीं कोई हमारे सर पर हाथ फेरने लगी। बिजली बन्द कर दी गई। उसके बाद क्या हुआ वह हम नहीं बतायेंगे क्योंकि आप हमारे चरित्र पर आक्षेप करने लगेंगे हम उस बक्त मस्ती में चूर थे। जब हम तफरीह कर चुके तो वही बूढ़ा हमारे पास आया और बोला कि श्रीमान्! यह विश्राम स्थान मेरा ही अपना स्थान है। ब्रह्मलोक को जाने वालों की सेवा यहां किया करता हूं। इसी स्थान का नाम धर्मराजपुरी रख छोड़ा है। भारत से ब्रह्मलोक जानेवालों की सेवा करना मेरा धर्म बन गया है। मैंने उससे पूछा कि आपका शुभ नाम क्या है और ये देव परियां कौन हैं? तो बूढ़े ने बताया कि मेरा नाम दादा लेखराज कृपलानी है। मैं पहिले सिन्ध प्रान्त में भारत में रहता

था। बड़ा मालदार था।

मैंने करांची में ओम मण्डली खोली थी, केवल युवती सुन्दरी स्त्रियों को योग सिखाता था। सरकार ने उसे बन्द करवा दिया तो फिर मैंने आबू पर्वत पर 'ब्रह्माकुमारी' मत चलाया जो ब्रह्माकुमारियां मेरी शिष्यायें मुझसे पहले मर गई थीं व अब मर जाती है उन्हें मैं यहां बुला लेता हूं। सब प्रकार से ऐशो आराम की जिन्दगी बिताता हूं मुझे भारत से प्रेम रहा है अतः वहां से जो भी लोग इधर सैर सपाटे को आते है उनकी चाय व शराब आदि जैसी उनकी रुची हो। खिदमत किया करता हूं और अपना जीवन सफल करता हूं। ये ब्रह्माकुमारियां भी उनकी रुचि के अनुसार सेवा करती हैं। हां यहां पर मृत्युलोक जैसे नियम नहीं हैं। यहां पाप पुण्य कुछ नहीं लगता है।

जिसकी जैसी भी इच्छा हो इनसे सेवा ले सकता है और जब तक चाहे यहां हमारे इस ब्रह्माकुमारी होटल में रह सकता है। मैं अतिथियों के चरण अपने हाथों से धोता हूं, उनके बिस्तर बिछाता हूं, उनका आने पर स्वागत करता हूं तथा बिदाई देता हूं। आपको यहां सभी आराम मिलेगा। खूब एशोआराम के साथ रहें। अब आपको आगे ब्रह्मलोक आने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अमरीका के लाखों टन वजनी तेज गति से मंगललोक जाने वाले राकेट ने स्वर्ग तथा ब्रह्मलोक दोनों को नष्ट कर डाला है। उसकी टक्कर से ब्रह्मा, विष्णु, महादेव सहस्त्रों देवता नष्ट हो गये, उसके बाद उसने ऊपर जाकर ब्रह्मलोक को ध्वस्त कर दिया। त्रिमूर्ति शिव भगवान खाना खा पीकर सो रहे थे, कम्बखत राकेट ने उनका भी पेट फाड़ डाला, लाखों मुक्त आत्मायें मर कर खाक में मिल गईं। वहां उनकी पत्नियों व बच्चों का रोना-पीटना सुनकर मेरा भी दिमाग खराब हो गया था। बहुत दिनों तक मैं विक्षिप्त सा रहा। अब कुछ ठीक होने पर मेंने यहीं पर मार्ग में होटल खोल रखा है। आप जैसे शौकीन आने वाले लोगों के चरण धोता व

अपना जीवन सफल करता हूं। ये बिस्कुट और अण्डे मैं पाकिस्तान से मगा लेता हूं। यह शराब मैं फ्रांस से मंगाता हूं। आपकी सेवा में कोई त्रुटि रही हो तो क्षमा करें। जो भी दान देना चाहें वह यहां दान पात्र में डाल दें। यहा का सारा खर्चा आप जैसे दानियों के बल पर ही मैं चलाता हूं।

यदि आपका विवाह न हुआ हो और इन सुन्दरी युवतियों में से कोई आप पसन्द करें तो आप साथ ले जा सकेंगे। मैं सहर्ष आपको उसे दे दूंगा।

"बूढ़े की बात सुनकर मुझे बड़ा आनन्द आया। जब तक मैं वहां रहा इतना मजा आया कि भारत व पाकिस्तान की कौन कहे, पेरिस के किसी होटल में नहीं आयेगा। क्योंकि मुझे प्रातः अपने काम पर जाना था, अतः मैं इच्छा होते हुए भी वहां अधिक नहीं ठहर सका। रात बीत चुकी थी दिन की निकासी का समय था। मैं उस बूढ़े से विदाई लेकर वापिस अपने स्थान को चला आया। इधर घड़ी ने ४।। का घण्टा बजा दिया। मेरी आंख खुल गई और पलग छोड़कर मैं उठ बैठा। वास्तव में ब्रह्मलोक के मार्ग में न तो कोई मार पीट या दण्ड का स्थान है, न वहां कोई धर्मराज रहता है। लेखराज को ही ब्रह्मा-कुमारियां 'धर्मराज' बता देती है। वह भी बेचारा होटल चलाता है। अतः किसी को भी ब्रह्मलोक जाने की बात नहीं सोचनी चाहिए।

अपने मित्र की बात हमें कुछ अटपटी तो लगी किन्तु हम उसे एक दम मिथ्या नहीं मान सकते हैं, क्योंकि इनके कथनानुसार वे स्वयं वहां का हाल देख आये हैं। अतः ब्रह्माकुमारियों के मार्ग में दण्ड मिलने की बात कहना सर्वदा मिथ्या है। लेखराज ने कहा भी था कि "याद रखो मैं धर्मराज भी हूं।" (सा० स० पृ० १९९)

वही ब्रह्माकुमारियों का फ़र्जी धर्मराज श्री लेखराज अब आकाश में होटल चला रहा है और सैरसपाटे को जाने वालों की सेवा "हर प्रकार" से किया व कराया करता है। यदि हमारे मित्र की बात को कोई गलत बताने लगेगा तो फिर लेखराज सम्प्रदाय ब्रह्माकुमारियों को कपोल कल्पित बिना सबूत वाली गप्पाष्टकें भी गलत मानी जावेंगी क्योंकि उनके पक्ष में कोई चश्मदीद गवाही भी नहीं है जबकि हमारे मित्र स्वयं को चश्मदीद गवाह बहलफ (शपथ के साथ) बताते हैं।

ब्रह्माकुमारी - "यह सृष्टि अनादि है क्योंकि जब यह मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष पुराना होकर जड़ जड़ीभूत हो जाता है, जब परमात्मा उसका विनाश करने से पहले नई सृष्टि की कलम लगा देते हैं और इसका पूर्ण विनाश कभी नही होता है''।। सा०स०पृ० १०८।।

उत्तर - प्राणी सृष्टि को चालू रखना नारियों का काम होता है तो जब अब ब्रह्माकुमारी सम्प्रदाय की मान्यतानुसार सृष्टि प्रलय में सन् ७० से आगे केवल ६ साल शेष हैं तो बतावें कि आगे मानवीयसृष्टि कायम रखने के लिए कितनी ब्रह्माकुमारियों में दादा लेखराज कलम लगा गये हैं अथवा ब्रह्माकुमारों ने कलम उनमें लगा दी है ? यदि नहीं लगाई तो क्रम कैसे चालू रहेगा ? क्योंकि सन् ७६ में प्रलय होने पर केवल लेखराज की चेलियां ब्रह्माकुमारियां ही बाकी बचेंगी बाकी सब तो मर ही जावेंगे, जैसा कि उसने दावा किया है कि-

"देखों मैं पवित्र सतयुगी सृष्टि की स्थापना करने आया हूँ। मुझे सहयोग दो तो मैं तुम्हें स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा। वरना देखो मौत सामने है यह सब कुछ नाश हो जायेगा और तब पछताने से कुछ न होगा याद रखो मैं धर्मराज भी हूँ।'' सा० स० पृ० १६९।।

अतः हमारा कहना है कि लेखराज कलम नहीं लगा गया तो सभी ब्रह्माकुमारियों को इस पवित्र काम को शीघ्र पूर्ण करने में जुट जाना चाहिए। मानवीय सृष्टि के क्रम को सतयुग में चालू रखने के पवित्र काम के लिए ब्रह्माकुमारियों को कलम जल्द से जल्द लगवानी चाहिए।

यदि कलम लगाने से तात्पर्य पृथ्वी में कलम लगाने से है तो दादा लेखराज के मरने से पहले ही एक दूसरी जमीन बना कर इस पुरानी जमीन में जोड़ लगाकर कलम लगा देनी थी ! पर वह मरते मर गया और यह कार्य भी न कर गया। तब तो ६ साल बाद प्रलय होने पर सारी ब्रह्माकुमारियाँ भी मरके जहन्नुम को चली जावेंगी फिर सतयुग कौन व कैसे लावेगा ? यह विचारणीय समस्या है।

ब्रह्माकुमारी - हर एक आत्मा में उसका पार्ट अव्यक्त रूप में समाया हुआ है और इस अनादि तथा पुनरावृत होने वाले नाटक में वह हर ५००० वर्ष के बाद फिर अपना पार्ट हूबहू अदा करता है। "सा०स०पृ० १११"

उत्तर - यह भी चण्डूखाने की एक गल्प है कि भारत में पुनः अंग्रेज आवेंगे, यवन शासक आवेंगे, औरंगजेब पैदा होगा, गांधी पैदा होंगे आदि। यदि आत्माओं को पार्ट ब्रह्माकुमारियों का फर्जी परमात्मा शिव देता है और वे उसी के कार्य कमानुसार आचरण करती हैं तो पाप पुण्य की जिम्मेदारी भी उसी परमात्मा की होगी। उसे ही सूली पर चढ़ाना चाहिए न कि पापियों को ! क्योंकि वे उसी के रचे नाटक को खेलते हैं। इस सम्प्रदाय वालों की सभी बातें महामूर्खता से पूर्ण होती हैं।

ब्रह्माकुमारी - आम की गुठली से मिर्च पैदा नही हो सकती। ठीक इसी प्रकार हर एक योनि की भी आत्मायें अलग अलग होती हैं मनुष्य योनि की आत्मायें पशु पक्षी योनि में नही जा सकती हैं। "सा०स०पृ० १२५"

उत्तर - जो परमात्मा इन विभिन्न प्रकार के बीजों को बनाता है उनमें जिस प्रकार के तत्वों को रखता है अथवा बीज जिन वृक्षों से होते हैं उनमें जो तत्व मूल वृक्ष से आते हैं विकसित होने पर ये बीज तदनुकूल ही वृक्ष पैदा करते हैं किन्तु जीवात्मा किन्हीं भौतिक तत्वों से निर्मित न होने से स्वरूप में विभिन्न नहीं होती हैं अतः जीवात्मा के कर्मानुसार विभिन्न योनियों में कर्म फल भोगने को जाने का सिद्धान्त ही सत्य है न कि आपकी अनर्गल कल्पना।

ब्रह्माकुमारी - "एक युग ५००० वर्ष का होता है जिनमें सतयुग, त्रेता द्वापर,

कलियुग यह चारों युग १२५० वर्ष के होते हैं। इन चारों में प्रत्येक मनुष्यात्मा को कुल ८४ बार जन्म लेना पड़ता है। कलियुग के अन्तिम जन्म के बाद प्रलय हो जाती है और परमात्मा ब्रह्मा के रूप में आते है व सतयुगी सृष्टि प्रारम्भ करते हैं। उस समय सभी आत्मायें उनके साथ स्वर्ग ब्रह्मलोक चली गई होती हैं और वहाँ से आकर पुनः जन्म लेती हैं''। (सा० स० पृ० १२८ से १३४ तक कथा सारांश)

उत्तर - तुमने जो ऊटपटांग कल्पना युगों की कर रक्खी है उसकी पुष्टि में कोई प्रमाण तुम नहीं दे सकती हो। ऐसी कल्पनायें तो शेख चिल्ली लोग ही किया करते हैं। भारतीय सत्य साहित्य के वेद, उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ, ज्योतिष के गणित शास्त्र के सूर्य सिद्धान्त आदि विश्वमान्य सत्य ग्रंथों में से किसी भी ग्रन्थ के प्रमाण से तुम्हारी कल्पना का समर्थन नहीं होता है। उनके अनुसार इस पृथ्वी की आयु की जो गणना है वही वर्तमान विश्व के श्रेठतम् वैज्ञानिकों ने भी अपनी यूरेनियम की उत्पत्ति की खोज के आधार पर सिद्ध की है। तुम्हारा लेखराज तो बेपढ़ा लिखा हर समय औरतों के चक्कर में फँसा रहने वाला व्यक्ति था जो ऊँट पटांग कल्पना कर करके तुम जैसी अबोध औरतों को बहकाया करता था।

ब्रह्माकुमारी - हमारे धर्म का वास्तविक नाम है "आदि सनातन देवी देवता धर्म।'' (सा० स० पृष्ठ १३६)

उत्तर - यह मिथ्या नाम ही तुम्हारे सम्प्रदाय के ढकोसला होने का प्रमाण है देवी देवताओं का विश्व में कहीं भी अस्तित्व नहीं है न कभी था। विद्वान पुरूषों को ही देवता तथा विदुषी नारियों को ही देवी कहते हैं तथा जिन सूर्य चन्द्रमा वायु अग्नि आदि भौतिक पदार्थों से प्राणीमात्र को जीवन में सहयोग मिलता है उनको जड़ देवता कहते हैं तुम्हारे फर्जी देवताओं, भूत प्रेत ब्रह्मराक्षस आदि का न तो कोई अस्तित्व है और न कोई रहने को लोक आदि हैं। तुम्हारे सम्प्रदाय का फर्जी नाम अशिक्षितों व भोली हिन्दु औरतों को बहकाने व ठगने खाने को

रख लिया है। ताकि देवी देवता धर्म के नाम पर वे तुम्हारे फन्दे में फंस जावें।

ब्रह्माकुमारी - भगवान ब्रह्मा, विष्णु तथा शकंर नाम वाले देवताओं के रचयिता अर्थात त्रिमुर्ति हैं। परन्तु श्रीकृष्ण तो विष्णु के साकार रूप में अर्थात् एक देवता ही थे। (सा० स० पृ० १९९)

उत्तर - आपने गीता को शिरोमणि माना है। जैसा कि सा० स० पृ० १६८ पर लिखा है कि "भगवान के महावाक्य किस शास्त्र में हैं ? जिस शास्त्र के वाक्य "भगवान उवाच इन शब्दों से शुरू होते हों वही हमारा धर्मशास्त्र होगा ऐसा शास्त्र गीता ही तो है।''

तो गीता में श्रीकृष्ण ने अपने को पूर्ण ब्रह्म अनेक स्थानों पर बताया है और तुम उनको मामूली देवता बताती हो और गीता का भी खण्डन करती हो यह तुम्हारा आचरण सज्जनोचित नहीं है। भारत के सभी पौराणिक त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु , महादेव को पूर्ण परमात्मा मानते हैं। उन्हीं ने इन तीन देवों की कल्पना भी की थी। ये उन्हीं के देवता भी हैं। तुम तो साक्षात् नास्तिक हो तुमको इनके बारे में मुँह खोलने का कोई हक नहीं है क्योंकि तुम पुराणों को भी नहीं मानती हो।

ब्रह्माकुमारी - "भगवान का अवतरष धर्म की अत्यन्त ग्लानि के समय अर्थात् कलियुग के अन्त में होता है। (सा० स० पृ० १४१)

उत्तर - तुम गीता की आड़ में पाखण्ड फैलाना चाहती हो। गीता ने धर्म ग्लानि के समय अवतार होने की गल्प ठोंकी थी उसी की नकल में तुमने लेखराज को अवतार बताकर अपना पन्थ चला डाला है। जब गीता को मानती ही नहीं, उसमें मिलावट मानती हो तो उसके इस अवतारवाद को ही क्यों स्वार्थवश ठीक मान बैठी हो ? धर्म की ग्लानि आजकल कहाँ है ? कुम्भ के मेलों में, पर्वों पर, गंगा के तीर्थों पर जाकर देख लो कितनी भीड़ लगती है। मन्दिरों में दर्शन करने वाली स्त्रियों की भीड़ देख लो। मुसलमानों की मस्जिदों में नमाज की भीड़ देख लो। गुरुद्वारों व गिरजों में सिक्खों व ईसाईयों की भीड़ देख लो। आर्य समाजी

उत्सवों में आर्यों का जमघट देख लो। सभी में धर्म भावना ठसाठस भरी मिलेगी। सारा मानव समाज भारत में धर्म की पवित्र भावना से ओतप्रोत है। हां, तुम्हारे पाखण्डी सम्प्रदाय ने धर्म ग्लानि अवश्य फैलाना प्रारम्भ कर दिया है। सभी का ईश्वर, उपासना, शास्त्रों के प्रति अनास्था पैदा करना आरम्भ कर दिया है। अत: कलियुग के इस युग में कोई धर्म ग्लानि नहीं है।

ब्रह्माकुमारी – श्रीकृष्ण ही श्री नारायण थे और वे द्वापर में नहीं हुए बल्कि पावन सृष्टि अर्थात् सतयुग में हुए थे।'' (सा० स० पृ० १४१)

उत्तर – श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर के समकालीन महाभारत काल में थे। युधिष्ठिर का संवत् भी चला आ रहा है जो अब पाँच हजार के लगभग है। कलियुग का प्रारम्भ भारतीय ज्येतिर्विदों के आधार पर महाभारत के पश्चात् हुआ था। तो श्रीकृष्ण का काल सतयुग में बताना तुम्हारी मूर्खता है।

ब्रह्माकुमारी – श्रीकृष्ण श्रीराम से भी पहले हुए थे। परन्तु आज लोगों को यह वास्तविक ज्ञान नहीं है। (सा० स० पृ० १४५)

उत्तर – यह तुम्हारी बात तो महामूर्खता पूर्ण स्वयं सिद्ध है क्योंकि गीता में जिसे तुम श्रीकृष्ण की रचना मानती हो, अध्याय १० के श्लोक ३१ में स्वयं श्रीकृष्ण जी ने कहा है- **पवन: पवताभस्मि राम: शस्त्रभृतामहम्।।** अर्थात- मैं पवित्र करने वालों में वायु हूँ और शस्त्रधारियों में राम हूँ इस प्रकार श्रीकृष्ण ने राम का उदाहरण देकर राम को अपने से पूर्व होना घोषित किया है दृष्टान्त सदैव अपने से पूर्व हुई अथवा वर्तमान बात का ही दिया जाता है। इससे स्पष्ट है कि तुम्हारे सम्प्रदाय का आदि प्रवर्तक लेखराज पूरा शेखचिल्ली था जिसने गीता भी नहीं पढ़ी थी।

ब्रह्माकुमारी - गीता ज्ञान वास्तव में पतित पावन परमात्मा शिव ने दिया था। (सा० स० पृष्ठ १४५, १४६)

उत्तर - तुम्हारा यह दावा भी सर्वदा झूँठा है। और यदि तुम्हारे खुद शिव ने गीता का ज्ञान दिया तो वह भी महा झूँठा था हम दो प्रश्न तुम्हारी पूज्य गीता

पर करते हैं, यदि साहस हो तो जवाब देने को चेलेंज स्वीकार करो।

(नं० १) - गीता अ० २ में जीवात्मा ने पुराने शरीर को त्याग कर पुनर्जन्म लेने की बात बताई है। उसी सिलसिले में श्लोक २४ में लिखा है। "नित्य:सर्वगत: स्थणु अचलो अयं सनातन:"।। अर्थात्- जीवात्मा नित्य है, सर्व व्यापक है, (ठूँठ की तरह एक जगह रहने वाला) अचल एवं सनातन है।

इसमें जीवात्मा के सर्वव्यापक स्थाणु (स्थिर रहने वाला) अचल आप सिद्ध करें। जबकि श्लोक २२ में उसे पुनर्जन्म के लिए इधर उधर जाने वाला पहिले बताया जा चुका है। क्या तुम्हारे फर्जी अल्पज्ञ परमात्मा शिव को यह भी अक्ल नहीं थी कि जो एकदेशीय , पुनर्जन्म के लिए आवागमन करने वाली सत्ता जीव है वह स्थाणु अचल तथा सर्व व्यापक नहीं हो सकता है यह भी समझ पाता इससे तुम्हारा शिव परमात्मा मूर्ख भी सिद्ध हो जाता है जो परस्पर विरोधी बात कह गया।

(नं० २) -गीता अ० १८ श्लोक ६८ से ७१ तक में लिखा है कि जो कोई गीता पढेगा या दूसरों को सुनावेगा उसको मोक्ष मिलेगी व पाप नष्ट होंगे।

श्रीकृष्ण - अर्जुन का एकान्त में किया हुआ सम्वाद व (अर्जुन को एकाएक मोह उत्पन्न होने पर श्रीकृष्ण द्वारा शंका समाधान द्वारा दिया गया ज्ञान) ही गीता कहा जाता है। उसे न तो वहाँ लिखा गया था न कि पूर्व से ही बनी हुई गीता पार्ट कृष्ण व अर्जुन ने सम्वाद रूप में खेला था। तो कृष्ण का शंका समाधान के अन्त में गीता के पढ़ने सुनाने से मोक्ष मिलने आदि का महात्म्य बताना सर्वथा मिथ्या बे सर पैर की बात नही है तो और क्या थी ? इसका उत्तर देवें। अन्यथा गीता को कहने वाला तुम्हारा शिव महा गप्पी सिद्ध है वास्तविक बात यह है कि गीता का श्रीकृष्ण जी से कोई संबंध नहीं था। वह उन्हें अवतार बताने के लिए बाद में रची गयी पुस्तक है और उसी गलत पुस्तक की आड़ में तुमने भी झूँठा पाखण्ड फैला रखा है।

ब्रह्माकुमारी - (दादा लेखराज ने कहा है) हे वत्स ! तुम मुझ परमात्मा

को याद करो। सारा समय मेरी स्मृति में लगाओं।

उत्तर - सभी झूठे आदमी मूर्खों को फांस कर अपना सम्प्रदाय चलाने को ऐसे ही कहते आये हैं और तुम जैसी कम समझ औरतें उनके फन्दों में फंस कर अपना तन और मन उन्हें अर्पण करके मूर्ख बनती रही हैं। यह लेखराज मर क्यों गया ? वह तो परमात्मा बनता था। क्या परमात्मा भी मर जाया करता है?

ब्रह्माकुमारी - हमें नर से श्री नारायण बनने का पुरूषार्थ करना चाहिए। (सा० स०पृ० १६०)

उत्तर - नारायण का अर्थ है नार - जल, अयन-मकान

अर्थात् - जल में रहने वाली मछली, मगर, केकड़े आदि। क्या तुम मनुष्य जन्म को त्याग कर मछली आदि जलचर बनना चाहती हो ताकि मनुष्य तुम्हारा शिकार किया करे। तुम यह भी नहीं जानती कि नारायण कौन होता है ? यदि नारायण का अर्थ परमात्मा है तो क्या मनुष्य भी परमात्मा बन सकता है यदि हां तो अब तक तो करोड़ों परमात्मा बन चुके होंगे।

ब्रह्माकुमारी - अब काल और महाकाल सर पर खड़ा है, सभी कुछ छोड़ कर परमधाम् जाना है। (सा०स०पृ० १६०-१६१)

उत्तर - यह तुम्हारी मिथ्या बकवास है। अभी सृष्टि को भारतीय भूगर्भविज्ञों की गणनानुसार पृथ्वी को २३४७०५०९२९ वर्ष तक स्थित रहना है, तब प्रलय आवेगी। तुम्हारा दादा लेखराज स्वयं अपनी मृत्यु का समय नहीं जान सका और जल्द ही मर गया तो पृथ्वी की उम्र वह क्या जान सकता था?

ब्रह्माकुमारी - परमपिता शिव ज्योतिर्बिन्दु है। वह परम्धाम के वासी हैं जहां पर प्रकाश ही प्रकाश है।'' (सा०स०पृ० १६७)

उत्तर - जहाँ तुम्हारा परमात्मा इस पृथ्वी का वासी नहीं है तो उस विदेशी की उपासना तुम क्यों करती हो ? क्या तुम्हारे परमात्मा को हमारी पृथ्वी पर प्लेग खा जावेगी ? यदि वह ज्योतिर्बिन्दु है तो उसके अस्तित्व का ही क्या प्रमाण

है? कहीं वर्षा के जल में बह गया न हो। उसके यहां जो प्रकाश रहता है वह दीपकों, मोमबत्तियों का है या बिजली के बल्बों का है। क्या उसे अँधेरे में रहने से डर लगता है ? कैसी हास्यास्पद कल्पना तुम्हारे मत के पाखण्डियों ने परमात्मा के बारे में की है।

ब्रह्माकुमारी - वेद उपनिषद पुराण हमारे धर्मशास्त्र नहीं हैं। हमारा धर्म का शास्त्र तो गीता है। (सा०स०पृ० १८२)

उत्तर - वेदों के जिन्होंने दर्शन नहीं किये, उपनिषद आदि का ज्ञान जिन्हें इसलिए नहीं हुआ क्योंकि संस्कृत पढ़ी ही नहीं थी। अत: उनकी वे ही मूर्ख लोग निन्दा करते हैं। गीता की तो इसलिए आढ़ लेती हो क्योंकि उसमें युग-युग में अवतार लेने की मिथ्या बात लिखी है और तुम्हें लेखराज को अवतार बताकर अपना ढोंगी पन्थ चलाना है। वरना तुम तो गीता की शत्रु हो उसे भी नहीं मानती हो उसमें भी क्षेपक मानती हो। गीता ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान माना है तब तुम भी वेदों को क्यों नहीं मानती हो ? जिस बात से उल्लू सीधा हो तुम तो वही मानती हो।

ब्रह्माकुमारी - जिस मनुष्य के तन में परमात्मा प्रवेश करते हैं उस में परमात्मा के गुण अथवा लक्षण दिखाई देते हैं। उसके मुँह से जो वाक्य निकलते हैं वह मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर होते है।'' (सा०स०पृ० १९०)

उत्तर - किन्तु लेखराज की सारी बातें तो झूठी एवं शेखचिल्ली जैसी हैं उनमें एक भी बात ज्ञान की नहीं है। तुम उसकी एक भी अलौकिक बात अभी तक पेश नहीं कर सकी हो। उसकी सारी कल्पनायें उपन्यासों जैसी मिथ्या है।

ब्रह्माकुमारी - परमात्मा के अतिरिक्त कोई आत्मा नहीं कह सकता कि "मैं तुम्हें परम धाम ले चलूंगा।'' (सा०स०पृ० १९१)

उत्तर - यही दावा ईसा व मुहम्मद ने बाईबिल व कुरान में किया था। यही दावा हँसामत एवं आनन्द मार्ग के प्रवर्तक ने भी किया है। यही दावा श्रीकृष्ण ने गीता में किया था और उन्हीं की नकल करके लेखराज ने भी दावा किया

था। सभी दावेदार झूठे और फरेबी थे तथा लेखराज भी महा झूठा था। दावा करने से कोई भी ईश्वर का अवतार अथवा मुक्तिदाता नहीं बन जाता या माना जा सकता है। आपके परमात्मा ज्योतिर्विन्दु के प्रवेश करने पर आदमी का शरीर स्वतः प्रकाशमान बन जाना चाहिए और उसमें से रोशनी निकलनी चाहिए। तब लेखराज के मकान में बिजली के बल्ब क्यों जलते थे तथा जलते हैं। दूसरों को देवता बनाने, स्वर्ग ले जाने आदि की बेहूदी बात सभी सम्प्रदायवादियों की गप्पाष्टक रही हैं जो कि झूठी तथा लोगों को फांसने का जाल होती हैं।

ब्रह्माकुमारी – शिव शक्तियों व गोपियों का भी भगवान के साथ गायन है। (सा०स०पृ० १९०)

उत्तर – यदि ब्रह्माकुमारियां गोपियाँ हैं तो भागवत के अनुसार वे साक्षात् व्यभिचारिणी जंगली एवं महादुष्टा होनी चाहिए और उनका अपने फर्जी परमात्मा लेखराज में व्यभिचार भाव होना चाहिए। देखो भागवत स्कन्द १० अध्याय २९ श्लोक ११ में लिखा है कि "तमेव परमात्मानं जार बुद्यापि संगता"।। अर्थ-गोपियों के परमात्मा कृष्ण में व्यभिचार भाव रहता था तथा स्कन्द १० अध्याय ४७ श्लोक ६० में लिखा है – "ववेमा स्त्रियो बनचरी व्यर्भिचार दुष्टा"।।

अर्थात् – वे गोपियां जगांली व्यभिचारिणी एवं धूर्त थीं। तब आप सभी ब्रह्माकुमारियों के गोपियां बनने से आपकी कलई स्वयं खुल गयी कदाचित् इसीलिए आप लोग लेखराज के साथ भुजा भर आलिंगन करती थीं। तुम जवान लड़कियों को बहकाकर पतित बनाती फिरती हो। तुम लोग अपने यहाँ आने वाले युवकों से जो आंखे लड़ाती हो काजल लगाकर निगाह से निगाह मिलाकर बातें करती हो वह भी इसी भावना से होता है। हमने भी तुम्हारे कुसंगों में जाकर स्वयं यह तुम्हारा नाटक देखा है।

ब्रह्माकुमारी – हमारा दादा लेखराज के साथ आलिंगन, पिता-पुत्री भाव से होता था।

उत्तर – कोई भी जवान औरत अपने खास भाई अथवा बाप बेटे से भी भुजा

भर कर यदि प्रगट आलिंगन करेगी तो दोनों का काम जागृत हुए बिना नहीं रह सकेगा, चाहे मनुष्य साक्षात् हिजड़ा ही क्यों न हो ! लेखराज पराई जवान औरतों को सीने से लगाकर प्यार क्यों करता था ? दूर से ही आशीर्वाद क्यों नहीं देता था ? हर चेली को सीने से लगाकर चिपटाकर प्रेम करना ही उसकी दुश्चरित्रता का प्रमाण है वे औरतें गोपियां भी धूर्त व बदमाश होती हैं जो पुरूष से भुजा भर कर आलिंगन करती है। --पतित पावन'' पुस्तक में लिखा है-

यहां यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक है कि मनुष्य की सद्गति भगवान के प्रजापति ब्रह्मा के शरीर में प्रवेश करके अवतरित होकर स्वयं गीता ज्ञान सुनाने पर ही होती है न कि गीता शास्त्र पढ़ने से। गीता अधूरी है उसमें सत्य केवल आटे में नमक मात्र है। (पृ० २०)

उत्तर - इसका अर्थ हुआ कि अब गीता सुनाने वाला तुम्हारा खुदा लेखराज तो मर गया। जो लोग उसके जीवन में उसका उपदेश सुन चुके केवल उन्हीं की सद्गति होगी और उसके जन्म से पूर्व व अब उसके मरने के बाद जिनको उसके शब्द उसके मुँह से सुनने को नहीं मिले उनकी दुर्गति होगी ये सारी बेहूदी बातें हैं, ब्रह्माकुमारियां क्या लोगों को मूर्ख बनाती नहीं फिरती है ? क्योंकि अब किसी की सद्गाति तो होनी नहीं है गीता को भी न मानना और उसकी दुहाई भी देना यह भी पागलों जैसी बात है। "परमात्मा परिचय'' पुस्तक में लिखा है-

ब्रह्माकुमारी - जिस प्रकार राष्ट्रपति के नीचे मन्त्रिगण रहते हैं जो उसके आदेश से विभिन्न विभागों के कार्य संभालते है उसी प्रकार (ब्रह्माकुमारियों के परमात्मा) शिव ने तीन काम करने के लिए ब्रह्मा विष्णु व शंकर को पैदा किया। इसलिए उसे त्रिमूर्ति कहते हैं (पृ० १३)

उत्तर - तब तो तुम्हारा परमात्मा दूसरों की मदद का मौहताज सिद्ध हो गया। वह सर्व शक्तिमान नहीं हैं। उसे अपना मकान झाड़ने को नौकर, खाना बनाने को बाबर्ची, पाखाना साफ कराने के लिए मेहतरानी की भी जरूरत पड़ती

होगी। ब्रह्माकुमारियों ! तुम मूर्खता पूर्ण बातें करने के स्थान पर कुछ दिन विद्या पढ़ लो तो उत्तम होगा वरना तुम्हारी जिन्दगी बरबाद हो जावेगी और बुढ़ापे में कोई बात भी नहीं पूछेगा। अतः गृहस्थी बसा कर किसी के घर में बैठो।

ब्रह्माकुमारी - "सूर्य चांद से भी पार उस मनुष्य लोक के आकाश तत्व के भी ऊपर एक अति सूक्ष्म लोक है जिसमें सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मपुरी उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में चतुर्भुज विष्णुपुरी और उसके भी पार शंकर की शिवपुरी है। वहां शब्दों की ध्वनि नहीं होती है। उससे ऊपर तेज लाल रंग का प्रकाश है जिसे ब्रह्मतत्व कहते हैं। इसके अंशमात्र (जरा से हिस्से) में शिव परमात्मा व आत्मायें रहती हैं। (परमात्मा परिचय पुस्तक, पृष्ठ १७)

उत्तर - तुम्हारी इन सब गप्पाष्टकों का प्रमाण क्या है ? तुम्हारी इन कल्पनाओं से भी उत्तम कहानियां "चन्द्रकांता'' और "अलिफ लैला'' में लिखी हैं जो इनसे कहीं ज्यादा मनोरंजक हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि गत वर्ष सन् १९६९ में अमेरिका का एक तीव्रगामी राकेट जो मंगल लोक को भेजा गया था वह मंगल के तारे के पास से गुजर कर ऊपर को चला गया था तथा तुम्हारे तीनों देवताओं को फाड़ता मारता हुआ तुम्हारे त्रिमूर्ति शिव परमात्मा के पेट को फाड़ता हुआ उसके ब्रह्मलोक से भी ऊपर अनन्त आकाश में चला गया था। तुम्हारे सारे देवताओं व परमात्मा त्रिमूर्ति शिव की उस राकेट ने हत्या कर डाली थी अब तुम्हारे पास देवता व परमात्मा कोई जिन्दा नहीं है जिसे तुम मान सको। यदि कोई हो तो हमारे समाने मय प्रमाण के पेश करो वरना हमारी बात सच्ची है कि वह मर गया।

ब्रह्माकुमारी - भगवान परम धाम के वासी हैं (गीता ज्ञान किसने दिया, पुस्तक पृ० ६)

उत्तर - तुम्हारा भगवान इस पृथ्वी का वासी क्यों नहीं हैं ? क्या यहां उसे बिच्छू काट खायेंगे या दोजख की भट्टी में फरिश्ते उसे डाल कर भून डालेंगे इस डर से वहां नहीं जाता है। या ब्रह्मलोक की चेलियों के साथ ऐश में उसे लिप्त

रहने से अन्यंत्र जाने की फुरसत ही नहीं मिलती है।

भगवान उवाच है कि जप तप तीर्थ दान शास्त्र अध्ययन इत्यादि से भक्ति मार्ग के कर्मकाण्ड और क्रियायों से किसी की सद्‌गाति नहीं हो सकती। (सतयुग में स्वर्ग कैसे बनें पुस्तक पृष्ठ २९)

उत्तर - तुम्हारी बात ना समझी से पूर्ण है। जप से संस्कार बनते हैं। तप से आत्मा व मन के दोष मिटते हैं। जहां विद्वान रहते हैं उन तीर्थों में जाने से उनके सत्संग से विचारों में पवित्रता व ज्ञान मिलता है। दान से परोपकार होता है, व शुभ कर्म का शुभफल मिलता है शास्त्र अध्ययन से ज्ञान बढ़ता है सन्मार्ग दर्शन मिलता है, विवेक, बुद्धि जागृत होती है। कर्मकाण्ड से मानव की प्रवृत्ति धर्म व परोपकार में लगी रहती है और इन सब बातों से जीवों का तथा स्वयं मानव का कल्याण होता है। अत: उन सभी शुभ कर्मों की निन्दा करना तुम्हारे अवतार लेखराज की मूर्खता प्रगट करता है।

ब्रह्माकुमारी - रामायण तो एक नोविल है जिसमें १०१ प्रतिशत मनोमय गपशप डाल दी हैं। (घोर कलह-युग विनाश पृष्ठ १५)

मुरली सं० ६५ में लेखराज ने लिखा है कि राम का इतिहास केवल काल्पनिक है।

उत्तर - संसार के सारे विद्वान एवं ऐतिहासिक व्यक्ति रामायण को सत्य घटना का ग्रन्थ मानते हैं पर तुम्हारा कुपढ़ लेखराज वेद शास्त्र रामायण, राम-सीता, रावण आदि के अस्तित्व को भी नहीं मानता है। उसने रामायण को नोविल(उपन्यास) लिखने का भी कमीनापन किया है। दावा बिना दलील के नहीं माना जा सकता है। लेखराज की चेलियां बतावें कि रामायण अथवा इतिहास के आधार पर उनके पास रामायण को नोविल सिद्ध करने का क्या प्रमाण है ?

ब्रह्माकुमारी - गीता शास्त्र में लिखा है कि भगवान धर्म ग्लानि के समय अवतार लेते हैं।

उत्तर - गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक अध्याय है, वह शास्त्र नहीं

है। गीताकार ने स्पष्ट बताया है कि जब अन्याय अत्याचार बढ़ जावें तथा तुम्हारे जैसे पाखण्ड़ी सम्प्रदाय लोगों को वेद धर्म की ओर से मोड़ने व धर्म भ्रष्ट करने लगें तो उस समय जो अनेक व्यक्ति पाखण्डियों, अत्याचारियों का दमन करके सत्य वैदिक धर्म की रक्षा करें उनको महापुरूष व अवतारवत् मानना चाहिए गीता ने एक कसौटी पेश भी की है जो व्यक्ति संसार भर के धर्मात्माओं की साधुओं की रक्षा करें पालन करें, दुष्टों की दुष्टता निवारण करके उन्हें भी सज्जन बनावें तथा धर्म की स्थापना करें केवल वहीं अवतार माने जो सकेंगे।

गीता की उस कसौटी पर तुम्हारा ढोंगी लेखराज फेल हो जाता है। वह वैदिक धर्म का घोर शत्रु था, पाकिस्तान व चीन के भारत पर आक्रमण के समय वह अपनी चेलियों से रंगरेलियां करता रहा कभी कहीं किसी सज्जन की तो उसने कभी रक्षा की नहीं तथा न चीन व पाकिस्तान से लड़ने मैदान में गया और न उसने कोई अच्छा काम किया। तो ऐसे झूठे व्यक्ति को तुम ब्रह्मा का क्यों अवतार मान बैठी हो ?

श्री कृष्ण जी आये थे तो महाभारत में अपना काम करके महाभारत के पश्चात् गये थे। यह तुम्हारा लेखराज तो कभी का मर गया, न प्रलय हुई न युग बदला, न संसार का विनाश ही हो सका। वह तो महाझूठा निकला।

ब्रह्माकुमारी - श्रीकृष्णजी ने महाभारत का युद्ध नहीं कराया था। (सा०स०पृ० १४३)

उत्तर - तुम्हारा गुरु महाझूठा था गीता की तुम बात-२ में दुहाई देती हो तो गीता के प्रथम अध्याय से ही यह सिद्ध है कि महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बने थे। तुम तो बिल्कुल कुपढ़ हो। स्वत: उस युग के महायुद्ध का विस्तृत वर्णन महाभारत ग्रन्थ में दिया हुआ है।

ब्रह्माकुमारी - संसार का पूर्ण विनाश सन् १९७६ में होने की भविष्यवाणी जो हमारे सम्प्रदाय प्रवर्तक ने की थी वह सत्य होकर रहेगी।

उत्तर - कई विदेशीय भविष्य वक्ताओं ने (जिनमें एक अमरीकन स्त्री भी

है) सन् १९६८ में अखबारों में प्रकाशित कराया था कि सन् ७३ से ७८ तक के वर्षों में रूस व चीन में युद्ध होगा और अमरीका रूस का साथ देगा। मध्य पूर्व में इजरायल व अरब राष्ट्रों में युद्ध होगा और भारत व पाक में भी युद्ध होगा। उन्हीं के आधार पर तुम्हारे लेखराज ने भी उनकी नकल में सन् ६८ में ८ वर्ष बाद महाविनाश की बात कह दी थी, यह उसकी अपनी घोषणा नहीं थी।

उपसंहार

ब्रह्माकुमारी नाम के पाखन्डी सम्प्रदाय की सभी मान्यताओं का हमने गत पृष्ठों में खंडन प्रस्तुत किया है जिससे सभी इस मत की गलत मान्यताओं व प्रचार से सावधान हो सकेंगे तथा दूसरों को भी सचेत कर सकेंगे।

इस मत की ट्रेण्ड सुन्दरियाँ नवयुवतियाँ १४ से २० साल तक की सुन्दर कन्याओं को बहका कर एवं उनको फांस कर ले उड़ती हैं और दूर देशस्थ अपने अड्डों पर भेज देती हैं। धनिक युवकों को उनके चक्कर में फांस कर उनसे धन ऐंठती है, साधारण लोगों व अधिक आयु की प्रौढ़ा स्त्रियों को ये कम पसन्द करती हैं। इनके अड्डे जहाँ भी रहे हैं सर्वत्र जनता ने इनके चरित्रों पर आक्षेप किये हैं। श्रृंगाररस उत्तेजक गानों के रिकार्ड इन सत्संगों में बजाये जाते है। लेखराज को परमात्मा बताकर उसी का ध्यान करने को कहा जाता है। चित्रों में ब्रह्मा, विष्णु व महादेव के चित्र में ब्रह्मा के स्थान पर लेखराज का चित्र बनाया जाता है लेखराज की पत्नी को आदि देवी सरस्वती कह कर उसका चित्र भी उसी के साथ दिखाते हैं मैजिक लालटेन से सिनेमा भी दिखाते हैं और राज्यपालों के चित्र भी दिखाते हैं ताकि लोग यह समझें कि बड़े बड़े आदमी इनके फन्दे में फंसे हुए हैं। यह सब ढोंग साधारण जनता को बहकाने के हैं। अधिकतर इस मत की प्रचारिकायें सुन्दरी नवयुवतियां सभी उड़ी हुई (भगाई हुई) औरतें होती हैं। नवयुवकों को उनके दुराचार के अड्डों से दूर रहना चाहिए तथा सभी

को चाहिए कि इन अड्डों पर अपनी बहू बेटियों को न जाने दें। जहाँ भी इनका अड्डा खुले उसे तुरन्त उखाड़ देने का प्रयत्न करें वरना वहाँ के लोगों को बाद मे पछताना पड़ेगा, "ब्रहमाकुमारी मत दर्पण" पुस्तक में उनके बारे में निम्न लेख छपा है। दैनिक वीर अर्जुन नई दिल्ली २४ जून सन् १९६१ के अंक में एक देवी कुन्तेशकुमारी शर्मा हापुड़ ने लिखा था कि मैं इन अड्डों में जाती रही हूँ मैं दावे के साथ कहती हूँ कि ऐसी व्यभिचारी संस्था को किसी भी राज्य या नगर में आश्रय नहीं देना चाहिए।

अंग्रेजी पत्र Flame ने ता० २४-९-६० के अंक में इसके बारे में लिखा था- आध्यात्मिकता और भक्ति की ओट में आबू पर्वत पर स्थित एक धार्मिक संस्था जिसके पीछे सैक्स (व्यभिचार) की भावना काम कर रही है, की गतिविधियों द्वारा सैकड़ों घरों को नष्ट किया जा रहा है।...... इस संस्था के सदस्य जिनका गुरू आबू पर्वत पर रहता है बड़ी चालाकी से नवयुवतियों को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें अपने पतियों को छोड़ने के लिए राजी कर लेते हैं ओर उन्हें अपनी संस्था में सम्मिलित कर लेते हैं जहाँ वे काम वासना की दास बन जाती हैं। अनेक नगरों में इनके दुराचारों के भण्डाफोड़ भी हो चुके हैं। हापुड़ की जनता ने इनकी हालतों को देखकर इनके अड्डे को नगर से उखाड़ फेंका था।

हमारा कहना है कि सभी स्थानों की जनता इस ओर ध्यान दे और इनका सर्वत्र बहिष्कार किया जावे। ये हिन्दु सभ्यता, इतिहास, शास्त्र व धर्म एवं सदाचार सभी की शत्रु हैं। हिन्दु धर्म के लिए विष के समान घातक होने से ब्रह्माकुमारियों को साक्षात् विष कन्या समझना चाहिए। इनके अड्डे दुराचार प्रचार के केन्द्र होते हैं। वे नौ जवानों को एक एक रात में संदेह आकाश में उड़ने की विद्या भी सिखाना जानती हैं। किन्तु यह विद्या सीखने वालों को अकेले ही आधी रात के समय इनके पास जाना पड़ता है। यह गुप्त योग विद्या उसी को सिखाती हैं जिन पर उनकी विशेष कृपा हो जाती है।

दैनिक सत्संगों में ये लोगों को काम कोध लोभ मोह से बचने की बातें कहती

हैं। काम का अर्थ है प्रजा की वृद्धि सन्तानोत्पति द्वारा करना। क्रोध का अर्थ है अन्याय व अत्याचार को सहन न करके मन में उसके दमन का भाव जागृत करना। लोभ का अर्थ है जीवन की आने वाली तथा वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति का संग्रह करना तथा मोह का अर्थ है सभी के साथ आत्मीयता की प्रेममयी भावना हृदय में रखना ये चारों बातें प्रत्येक के लिये जीवन में अनिवार्य आवश्यकतायें होती हैं। लौकिक मनुष्यों में इनका मिटना सृष्टि क्रम के विरूद्ध एवं आत्महत्या जैसी बात है। अपने सत्संगों में जाने वाली स्त्रियों व युवकों को ये आँखें लड़ाकर निगाह से निगाह मिलाकर बातें करके प्रभावित करती हैं नवयुवक इनकी इस क्रिया से शीघ्र ही वशीभूत हो जाते हैं। यह अधिकतर धनिक युवक को आकर्षित करती है।

देश में धर्म प्रचार की आढ़ में नवयुवतियों का यह हिन्दुधर्म संस्कृति, इतिहास, धर्मशास्त्र विरोधी प्रचार का संगठन धर्म के संगठन के लिए हानिकारक है। उसे सर्वत्र उखाड़ देने का प्रयत्न होना चाहिये।

श्री डा० श्रीराम आर्य द्वारा रचित
साहित्य का
आगामी प्रकाशन

१– हं सामत का पोलखाता

२– सत्य साईंबाबा का कच्चा चिट्ठा

३– जनेऊ

४– नृसिंह अवतार वध

५– राधास्वामी पाखण्ड खण्डन

यह उपरोक्त साहित्य छपने के बाद डा० साहब की शेष पुस्तकें प्रकाशित कराई जावेंगी।

"प्रबन्धक"
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
(गाजियाबाद)

दीपका प्रिन्टर्स, तुराब नगर, गाजियाबाद।

हमारे द्वारा प्रकाशित साहित्य –

१-	निर्णय के तट पर (भाग ४) [प्राचीन शास्त्रार्थो का संग्रह]	अमर स्वामी सरस्वती	३००-०० (प्रति भाग)
२-	कौन कहता है द्रोपदी के पांच पति थे ?	,,	१२-००
३-	गीता में ईश्वर का स्वरूप	,,	३-००
४-	कौन कहता है अहिल्या पत्थर की शिला बन गई थी ?	,,	०-५०
५-	कौन कहता है विवाह के समय श्रीराम की आयु पन्द्रह वर्ष तथा सीता जी की आयु छ: वर्ष थी ?	,,	०-५०
६-	रजनीश भगवान या शैतान	श्रीमती वीनाराय एम.ए.	०-५०
७-	सत्य सांईबाबा का कच्चा चिट्ठा	,,	०-५०
८-	MURDER OF GANDHI	Nathu Ram Godse	१०-००
९-	ईश्वर सिद्धी	राम चन्द्र देहलवी	०-५०
१०-	कुरान की विचारणीय बातें	डा० श्रीराम आर्य	३-००
११-	अण्डा और मांस में विष	,,	०-५०
१२-	खुदा का रोजनामचा	,,	,,
१३-	कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	,,	,,
१४-	ईसा और मरियम	,,	,,
१५-	ईसा मसीह मुक्तिदाता नहीं था	,,	,,
१६-	मूर्तिपूजा पर ३१ प्रश्न	,,	,,
१७-	अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	,,	,,
१८-	मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न	,,	,,
१९-	ईसाई मत का पोलखाता	,,	,,
२०-	आर्य समाज के प्रवेश पत्र	,,	सैकड़ा ३-००
२१-	संसार के पौराणिकों से ३१ प्रश्न	,,	०-५०
२२-	ब्रह्माकुमारी का मत खण्डन	,,	६-००
२३-	हंसामत का पोलखाता	,,	३-००
२४-	नृसिंह अवतार वध	,,	०-५०
२५-	चोटी	,,	०-५०
२६-	जनेऊ	,,	०-५०
२७-	१८५७ का सेनानी–फिरोजशाह	रामेश्वर उपाध्याय	२०-००

नोट : विस्तृत जानकारी हेतु प्रकाशन से सूची-पत्र मंगायें।

निवेदक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)